श्रीमज्जवाहराचार्य के जीवन-संस्मरण

राम चमक रहे भानु समाना

साधुमार्गी पब्लिकेशन

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:32 PM

श्रीमज्जवाहराचार्य के जीवन-संस्मरण

पं. पूर्णचंद्रजी दक (न्यायतीर्थ)

राम चमक रहे भानु समाना

साधुमार्गी पब्लिकेशन

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:32 PM

ISBN No. : 978-93-86952-56-1

श्रीमद्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री जवाहर लाल जी महराज के जीवन के संस्मरण

लेखक : पं. पूर्णचन्द्र जी दक (न्यायतीर्थ)

पूर्व प्रकाशक : श्री साधुमार्गी जैन पूज्य श्री हुक्मीचंद जी महाराज का हितेच्छु श्रावक मण्डल, रतलाम (मालवा)

प्रथम आवृत्ति : 1000 प्रतियाँ
पूर्व प्रकाशन वर्ष : जून, 1945

द्वितीय आवृत्ति : 500 प्रतियाँ
पून: प्रकाशन वर्ष : सितम्बर, 2019

पुन: प्रकाशक
एवं प्राप्ति स्थान : साधुमार्गी पब्लिकेशन
अर्न्तगत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.)
दूरभाष : 0151-2270261

मूल्य : 20/-

मुद्रक : तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
मो. 9314962474/75

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:32 PM

लेखक के दो शब्द

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज साहिब के व्याख्यान व उपदेश श्रवण करके मुझे जैन धर्म का वास्तविक रहस्य ज्ञात हुआ है। जैन धर्म-जैन समाज तकही सीमित नहीं है। भगवान् महावीर ने मनुष्य मात्र के लिये धर्म का द्वार खोल दिया था। संवत् २००२ वैशाख शुक्ला ३ अक्षयतृतीया से मैंने अपने जीवन का क्रम बदल दिया है। भील मीणा प्रधान मेवाड़ के ग्रामों में सेवा कार्य करना प्रारंभ किया है। मुझे इस में जैन धर्म की शुद्ध सेवा मालूम हुई है। वैसे मेवाड़ के भील मीणे कालाजी (आदिनाथ ऋषभदेवजी) को मानते ही है। मुझे तो इन में दारूनिषेध, मांसत्याग और अचौर्य का प्रचार करना है। हुन्नर उद्योग और अक्षरज्ञान भी देना है। पूज्य श्री के उपदेशों और भावनाओं के अनुकूल यह कार्य है।

श्रीमान् वक्तावरमलजी सांड सा० ने मेरे इस निबन्ध को प्रकाशित कराने में द्रव्य सहायता दी है इसके लिए मैं आभारी हूं। हितेच्छु श्रावक मण्डल और उसके मन्त्री श्री श्री बालचन्दजी सा० ने प्रकाशन, प्रूफसंशोधन आदि कुल कार्य किया है जिस के लिए मैं उनका उपकार मानकर ही उऋण नहीं हो सकता। इस निबन्ध से यदि पाठकों को कुछ प्राप्त हो तो वह इन्हीं का समझा जाय।

कानोड़
वैशाख पूर्णिमा
२००२

पूर्णचन्द्र दक

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:32 PM

प्रकाशकीय

हुक्म गच्छ के छठें पट्टधर हुए हैं आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा.। आचार्य श्री के जीवन पर कई पुस्तकें अलग–अलग लोगों ने लिखी। उन्हीं में एक पुस्तक है **'श्रीमज्जवाहराचार्य के जीवन–संस्मरण'।**

इन संस्मरणों को लिखा है पं. पूर्णचन्द्र जी दक ने। विक्रम संवत् 2002 (ईस्वी सन्– 1945) में लिखी गयी इस पुस्तक का प्रकाशन किया था हितेच्छु श्रावक मण्डल रतलाम ने। असीम व्यक्तित्व के स्वामी आचार्य श्री देव के जीवन पर लिखी गई सभी पुस्तकों की वैसे तो अपनी सीमा है किंतु यह पुस्तक इस मायने में विशेष और अलग है कि इसके लेखक का बहुत समय आचार्य श्री के सानिध्य में गुजरा है। इसमें लेखक ने वही लिखा है जिसे उन्होंने देखा, सुना और महसूस किया।

एक और मायने में यह पुस्तक अन्य पुस्तकों से अलग है। यह पुस्तक प्रकाशन के उद्देश्य से नहीं लिखी गयी थी। यह उस प्रयास का परिणाम है, जिसके तहत आचार्य श्री के जीवन पर अच्छा लिखने वालों को पारितोषिक देने की बात कही गयी थी। यह जानकर बहुत लोगों ने अपनी लेखनी चलाई। उन बहुत लोगों द्वारा लिखे गए में से यह वह पुस्तक है जिसका चयन पारितोषिक के लिए किया गया था। आगे चलकर इसे प्रकाशित किया गया।

पूर्व प्रकाशित पुस्तक के इस पुनर्मुद्रण में किसी भी प्रकार का परिवर्धन, परिवर्तन, संशोधन नहीं किया गया है। अपनी विरासत को संजोने के लिए सब कुछ यथावत् रखा गया है।

संयोजक

साधुमार्गी पब्लिकेशन

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अहोभाव
संघ के प्रति अहो भाव

हे पितृ तुल्य संघ! हे आश्रयदाता संघ!

संसार के प्रत्येक जीव की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नरत संघ! तुम्हारी शीतल छांव तले हम अपने परिवार के साथ तप-त्याग से युक्त आध्यात्मिक, सुखद जीवन जी रहे हैं। तुम्हारे ही आश्रय में रहकर हमने अपने नन्हें चरणों को आध्यात्मिकता की दिशा में बढ़ाया है। तुमने ही हमें आत्मा के अन्वेषण हेतु प्रेरित किया। तुम्हारी ही प्रेरणा से प्रेरित होकर हमने अपने जीवन को सन्मार्ग की ओर बढ़ाया है। इस हेतु हम संघ का अभिवादन करते हैं।

संघ ने हम अकिंचन को इस पुस्तक '**श्रीमज्जवाहराचार्य के जीवन के संस्मरण**' के माध्यम से सेवा का अनुपम अवसर प्रदान किया। इस हेतु हम अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं। अन्तर्भावना से संघ का आभार व्यक्त करते हुए यह विश्वास करते हैं कि भविष्य में भी परम उपकारी श्री संघ शासन हमें सेवा का अवसर प्रदान करता रहेगा।

अर्थ सहयोगी
कोमल कुमार, प्रकाश कुमार
अशोक कुमार, धर्मेन्द्र आंचलिया
बेगूं-पनवेल

द्रव्य साहयक श्रीयुत सांडजी का वक्तव्य

श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी महाराज साहब जैन जगत में आदर्श पुरुष हो गये हैं। आपके दर्शन मुझे प्रथमबार जलगांव में हुए थे। तबसे श्रीमान् की विद्वता, भावसमिति, सहनशीलता आदि गुणों से रंजित होकर मैं उनका उपासक बन गया था और पश्चात् उदयपुर, कपासण, जामनगर, बगड़ी, बीकानेर आदि अनेक स्थलों पर जा कर प्रतिवर्ष दर्शन एवं सेवा का लाभ होता रहा त्यों ही मेरी श्रद्धाभक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। शक्त्या-नुसार खादी को अपनाकर उनके उपदेशों को जीवन में उतार देने की कोशिश करता हूं।

हमारी समाज के विद्वानों में उच्चस्थान रखने वाले श्रीमान् पं० पूर्णचन्द्रजी साहब दक न्यायतीर्थ जो कुछ समय से इन्दौर रहते थे पूज्य श्री के जीवन एवं अपने सम्पर्क में आयी हुई घटनाओं के विषय में पण्डितजी ने एक निबन्ध लिखा है वह श्रवण करने से मेरी हार्दिक भावना हुई कि यह निबन्ध पुस्तकाकार में प्रकाशित हो तो जनता अत्यधिक लाभ उठा सके।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:33 PM

मैंने उक्त अभिलाषा पण्डितजी के आगे प्रकट करके दो सौ खर्च के लिये देने का कहा। पण्डितजी ने मेरी इच्छा को मान देकर रत्नाविदन्त श्री सा० जैन पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० की सम्प्रदाय के हितेच्छु श्रावक मण्डल के मन्त्री जी को प्रकाशित करने के लिये भेजा। इन्होंने प्रकाशन की सारी व्यवस्था करके उत्तम प्रबन्ध कर दिया है।

अतः मैं श्रीमान् पण्डितजी एवं हितेच्छु श्रावक मण्डल के मानद् मन्त्री श्रीमान् बालचन्दजी साहब श्रीश्रीमाल के प्रति कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता।

श्रीमान् आचार्यवर का तो मुझ पर इतना उपकार है कि मैं भवोभव में भी उऋण नहीं हो सकता। किंबहुना।

इन्दौर — जेठमल बख्तावरमल सांड

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:33 PM

प्रकाशक का वक्तव्य ।

हमारी साधुमार्गी जैन समाज में श्रीमान् पण्डित पूर्णचन्द्रजी साहिब दक-न्यायतीर्थ उच्च श्रेणी के विद्वान हैं। आप ने इन्दौर सेठ भैरोदानजी साहिब सेठिया के संस्कृत प्राकृत विद्यालय में अभ्यास करके शिक्षा व संस्कार प्राप्त किये है और अनेक शिक्षा संस्थाओं में प्रधानाध्यापक का कार्य किया है। आपके विचार एवं लेखन शैली भी सुन्दर है। श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी महाराज साहिब के सम्पर्क में आकर आपने जैन धर्म का श्रद्धा पूर्वक अच्छा अभ्यास किया है।

पूज्य श्री के स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् श्री जवाहिर जीवन चरित्र समिति ने सामग्री संग्रह करने आदि उद्देश्यों को मुख्य करके पूज्य श्री के जीवन की घटनाओं के विषय में निबन्ध लिखने के लिये प्रेरणा करके अच्छा निबन्ध लिखने वालों को पारितोषिक देनेकी जाहिरात की थी जिस पर से उक्त पण्डितजी ने "पूज्य श्री के जीवन के संस्मरण" शीर्षक निबन्ध लिखा। यह निबन्ध सर्वपूर्ण होने से पारितोषिक के योग्य समझा गया और पण्डितजी को पारितोषिक प्राप्त हुवा।

पण्डितजी का यह निबन्ध भोपालगढ़ से "जिनवाणी" में प्रकाशित हो रहा है किन्तु वह संक्षिप्त होने से श्रीयुत सेठ जेठमलजी

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:34 PM

घड़ामदासजी सांड इन्दौर निवासीजी ने उक्त निबन्ध को पुस्तकाकार में प्रकाशित कराने के लिये उत्सुकता प्रकट की इतना ही नहीं रु० २००) दो सौ की आर्थिक उदारता दिखला कर पांच सौ प्रति अपने तरफ से वितरण करने की इच्छा दिखाई किन्तु अमूल्य पुस्तक का जैसा चाहिये वैसा सदुपयोग नहीं होता इस लिये इस की नाम मात्र किंमत रख कर पांच सौ के बदले एक हजार प्रतियें प्रकाशित करके वाचकों के कर कमलों में पहुँचाई जाती है। आशा है पूज्य श्री के जीवन चरित्र के उत्सुक जीवन चरित्र तय्यार हो कर प्रकाशित न हो जाय तब तक इसेही श्रद्धाबुद्धि से अपनायेंगे और उनके जीवन की घटनाओं एवं उच्च विचारों का अनुकरण करना सीखेंगे तो लेखक एवं मेरा श्रम सफल होगा।

अन्त में मैं एक वार फिर पण्डितजी का आभार प्रदर्शित करता हूं जिन की कृपासे मुझे यह 'संस्मरण' प्रकाशित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है इत्यलम्—

रतलाम (मालवा)
वैशाखी पूर्णिमा
सं० २००२ विक्रमी

भवदीय
बालचन्द श्रीश्रीमाल
मन्त्री, श्रीजैन हितेच्छु
श्रावक मण्डल ऑफिस

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:34 PM

अनुक्रमणिका

जीवन के कुछ संस्मरण	:	1
बीकानेर	:	6
तेहर पंथ मान्यता के विषय में	:	7
निकट सहवास का चेप	:	8
खद्दर के विषय में	:	9
आत्म ज्योति जगाने के लिए ध्यान एवं प्रार्थना	:	13
समाज का साथ	:	16
मालवीयजी का आगमन	:	18
शंकाओं का समाधान व आत्म-सिद्धि	:	21
भ्रामक सिद्धान्तों का प्रतीकार	:	24
जैनागमों के मननीय वर्णन	:	26
ध्यान शक्ति एवं आचार की बड़ कदर	:	28
सरदार शहर के संस्मरण	:	29
सत्य सिद्धान्तों का प्रचार	:	31
भीनासर	:	34
बीकानेर के प्रधानमंत्री को योग्य संदेश	:	34
तप का महात्म्य	:	35
कपासन	:	37
स्त्री शक्ति का चित्र	:	36
बम्बोरा (मेवाड़)	:	41
न्याय पर दृढ़ता	:	49
कानौड़ (मेवाड़)	:	50
रतलाम	:	54
अहमदाबाद	:	56
पालनपुर	:	63
बिखरे मोती	:	71

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:34 PM

❀ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ❀

परम प्रतापी प्रसिद्ध श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज साहब

के

जीवन के कुछ संस्मरण

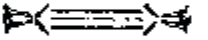

सन् १९२७ में पूज्य श्री का चातुर्मास मरुधाड़ की राजधानी बीकानेर में था। उस समय इन पंक्तियों का लेखक स्थानकवासी जैन समाज के उदारचेता दानवीर सेठ भैरोदानजी साहिब सेठिया के 'संस्कृत प्राकृत विद्यालय' में विद्याध्ययन करता था।

पूज्य श्री व्याख्यान में वहाँ शालिभद्र चरित्र सुनाते थे। लेखक को पूज्य श्री के व्याख्यान श्रवण का इतना शौक था कि प्रातःकाल के अमूल्य समय में जब कि कक्षा का पाठ तय्यार करना आवश्यक था, पाठ छोड़कर व्याख्यान श्रवणार्थ चला जाता था। पिछले दिन के प्रकरण को पूज्य श्री इस खूबी के साथ छोड़ते थे

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:34 PM

कि श्रोता का मन उसके साथ बंध जाता था। और आगे की बात सुनने के लिए आना ही पड़ता था। मैं भी पूज्य श्री के व्याख्यान का रसिया बन गया था। एक दिन व्याख्यानमें पूज्यश्री ने फरमाया कि शालिभद्र को इतनी ऋद्धि सिद्धि मिली और प्रतिदिन तेंतीस पेटियाँ बहुमूल्य जवाहरात व वस्त्रों से युक्त स्वर्ग से उतर आया करती थी, इसका कारण आप लोगों ने सोचा है? पौद्गलिक आनन्द की इतनी विपुल साधन सामग्री उसे प्राप्त थी कि सूर्योदय व सूर्यास्त तक का उसे पता न रहता था। इतना होने पर भी जब उनकी मातेश्वरी ने उनसे यह आकर कहा कि पुत्र! नीचे आओ हमारे नाथ पधारे हैं तब उनका वह सब आनन्द हवा हो गया और मन में निश्चय कर लिया कि अब ऐसी करनी करूँ कि मेरे पर कोई नाथ न रहे। ऐशआराम में मशगूल रहने वाला व्यक्ति इतने इशारे मात्र से संसार की अनित्यता समझ जाय, इसका असली कारण खोजना चाहिए।

पूज्य श्री ने दूसरे दिन के व्याख्यान में स्पष्टीकरण करके बताया कि पूर्वभव में जब शालिभद्र छुटपन में जंगल के शुद्ध वातावरण में बछड़े चराने जाया करता था तब उस में ये संस्कार उत्पन्न हुए थे, जो एक महापुरुष बनने के लिए आवश्यक थे। जंगल के शीतल सुगन्ध और मन्द वायुमंडल में उसकी चेतना शक्ति विकसित होती थी और गन्दे संस्कार हवा के साथ हवा हो जाते थे। शहरों के गन्दे वातावरण में यह ताकत नहीं है। पूर्व के संस्कार जाग्रत होने

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:34 PM

से ही एक साधारण कारण मुक्ति व संसार त्याग में निमित्त बन गया था ।

पूज्य श्री ने संगम ग्वाला की गोचर भूमि का इस खूबी के साथ चित्र खींचा कि श्रोता गद् गद् हो गये थे । यह सब सुनते हुए मेरे मन में भी बात आई कि इस प्रकार के व्याख्याता को जो व्याख्यान देने को अद्भुत छटा प्राप्त हुई है वह भी अवश्य ही किसी ऐसे ही वातावरण में मिली होनी चाहिये । उस समय पूज्य श्री के जन्म स्थान को देखने की मन में इच्छा उत्पन्न हुई और कभी न कभी पूरी करने की भावना मन में घर कर गई ।

ठीक दस वर्ष के बाद सन् १९३७ में मुझे पूज्य श्री का जन्म स्थान देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । पंजाब के प्रसिद्ध वयोवृद्ध जैनाचार्य पूज्यश्री सोहनलालजी म० सा० के स्मारक में बनारस हिन्दु युनिवरसीटी में 'पारसनाथ जैन विद्यालय' में सुपरिन्टेन्डेंट के स्थान पर सब से पहले मेरी ही नियुक्ति हुई थी और उक्त विद्यालय के लिए योग्य छात्र प्राप्त करने के सिलसिले में मैं थांदला पहुंचा था । रतलाम से बम्बई जाने वाली लाईन में रेल्वे स्टेशन से तीन चार माईल दूर छोटी छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ यह कस्बा देखा कि दस वर्ष पूर्व की वे सब बातें मगज़ में उतर आई । थांदले के पास ही घघरी नदी है जिस के आसपास के वृक्षों की शोभा चित्त को हरण कर लेती है । हमारे चरित्र नायक को भी बचपन में ऐसे पवित्र

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:34 PM

वातावरण में रहने का अवसर मिला था। इसी शान्त भूमि के शुद्ध जल वायु से उन का पोषण हुआ था इसी भूमि की मिट्टी से उन का कलेवर वृद्धिंगत हुआ था और स्वच्छता, पवित्रता, स्पष्टवादिता, सरलता आदि सद्गुण पुष्ट हुए थे। आगे चलकर जो गुणों का विकास हम लोगों ने उनमें देखा उसके बीज इस भूमि में तय्यार हुए थे। बीज ही सब कुछ है। जैसा बचपन का संस्कार होगा वही आगे फलेगा फूलेगा। जो बात पूज्य श्री व्याख्यानों में कहा करते थे वह उन पर भी लागू होती है।

पूज्य श्री का बचपन इसी शस्य-श्यामला भूमि में बीता था। यहीं पर थोड़ा बहुत विद्याध्ययन हुआ था। ऐसा सुनने में आया था कि पूज्य श्री का दिमाग सोलह-सत्रह वर्ष की उम्र में कुछ भ्रमित हो गया था। मैंने जब यह बात सुनी थी तब मनमें यह विचार आया था कि पूज्य श्री के उस वक्त के दिमाग में भी विचारों का कितना उतार चढ़ाव था कि दिमाग उसे सहन न कर सका था।

एक बात मैं स्पष्टरूप से निवेदन कर देना चाहता हूँ। कि मैं कोई लेखक नहीं हूँ। अभी तक कोई खास रचना भी नहीं की है। केवल पूज्य श्री के प्रति मेरे हृदय में भक्तिभाव है। और यह भक्तिभाव ही मेरे लेखन में सदा साथ रहेगा और उसी के आधार से कुछ संस्मरण पाठकों की सेवा में रखना चाहता हूँ। वैसे तो आजकल के पढ़े लिखों में साधुओं के प्रति

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

भक्ति भाव बहुत कम देखा जाता है। मैं भी उनमें से हूँ। शास्त्रों में साधुओं का आचार और विचार कैसा बताया गया है और आजकल के साधुओं का आचार विचार कैसा है यह सब तुलनात्मक दृष्टि से देखते हैं तब बहुत कम साधु नजर आते हैं जिन में शास्त्रोक्त वर्तन पाया जाता हो। पढ़े लिखे व्यक्तियों की आशा का दीपक एक मात्र जवाहर ही था। पूज्य श्री के प्रति मेरी हार्दिक भक्ति है। उसी भक्ति के कारण मैं बहुत पहले ही कुछ लिखने वाला था किन्तु प्रमादवश लिख न सका था। 'जैन प्रकाश' में 'जवाहर जीवन चरित्र समिति' भीनासर की तरफ से निबन्ध लिखने की सूचना पढ़ कर लिखने की इच्छा पुनः जाग्रत हो गई और इसी निमित्त से यह भेंट पाठकों की सेवा में आदर के साथ उपस्थित करता हूँ।

एक बात और है। मैं जो कुछ लिखूँगा वह मेरे कानों से सुना हुआ, आँखों से देखा हुआ ही होगा। दूसरों की सुनी बात यदि लिखूंगा तो वहाँ उल्लेख कर दूँगा। सौभाग्य से मुझे पूज्य श्री के सेवा में रहने के अनेक प्रसंग आये हैं। उनके साथ रहने से मेरे मन पर जो गहरी छाप पड़ी है और उनके भाषण सुनने से जो विचार विभूति मिली है वही मैं लिखना चाहता हूँ।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

बीकानेरः—

बीकानेर के चातुर्मास में पाठ तय्यार (क्लास-वर्क) करने के समय में भी मैं व्याख्यान सुनने क्यों आता था ? इसका कारण यह था कि मैं न्याय का अध्ययन करता था जिस में शुष्क तर्क वाद भरा पड़ा था। पढ़तेर मगज़ थक जाता था। उस नीरस तर्कवाद पूर्ण पाठ से जी उकता जाता था और कहीं रस पूर्ण विषय ढूंढता था। पूज्य श्री के व्याख्यानों में जीवन स्पर्शी प्रश्न चर्चे जाते थे। हमारे वर्तमान जीवन को शुद्ध बनाने की सामग्री उनके व्याख्यान में मिलती थी। धर्म, पुस्तकों का ही विषय नहीं किन्तु जीवन का विषय है। केवल परलोक में 'सीट रिझर्व' कराने के लिए ही धर्म नहीं है किन्तु वर्तमान में हमारे इसी मानव जीवन में आनन्द पूर्ण वातावरण पैदा करने के लिए है। अभी तक मैं बहुत छोटे दायरे में था। और ऐसे उदात विचार सुनने का प्रसंग तब तक नहीं आया था। मैं तो व्याख्यान सुनकर खुश खुश हो जाता था। हृदय में आनन्द समाता न था। उस वक्त का हमारा अध्ययन कितना संकुचित, सांप्रदायिक व कुण्ठित विचार युक्त था। जब पूज्य श्री के विचारों से तुलना करते तब हृदय पट खुल जाते। पूज्य श्री का विशाल दृष्टिकोण, मानवता के प्रति अगाध प्रेम, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, सदाचार आदि सद्गुणों का विवेचन देख सुनकर मन को संतोष मिला था। और

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

ऐसा लगता था मानों मेरे मन में रही हुई बातें ही पूज्य श्री बता रहे हैं। उस उम्र में भी मैं पूज्य महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद आदि के विशालता युक्त विचार पढ़ चुका था और उनके समर्थन में कुछ सुनना चाहता था। क्या ऐसे विशाल उदात्त और समष्टिरूप विचार हमारे जैन धर्म में भी हैं या नहीं, यह तरंग उठा करती थी। उस वक्त यह ख्याल था कि जो कुछ अच्छा है वह हमारे जैन धर्म में ही है। पूज्य महात्माजी जैन ही होंगे आदि। पूज्य श्री के व्याख्यानों से मेरे मन का समाधान हो गया। वे नवीन विचारों को सूत्रों की साक्षी देकर पाठ सुनाकर पुष्ट करते थे और जैन शैली से जनता के समक्ष रखते थे।

तेरह पंथ मान्यता के विषय में

पाठकों को यह विदित है कि मारवाड़ में स्थानकवासी जैनों से जुदा 'तेरह पंथ सम्प्रदाय' है। इस संप्रदाय की मान्यता जैनों के दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्ति–पूजक व स्थानकवासी सम्प्रदायों से दया और दान के विषय में भिन्न है। अहिंसा के दो अर्थ होते हैं। विधि रूप और निषेध रूप। अहिंसा का निषेध रूप अर्थ है किसी जीव को मन वचन और काया से न मारना और विधि रूप अर्थ है मरते हुए को बचाना, रक्षा करना। विधि रूप अर्थ में ही प्रेम, मानव दया, परोपकार दान आदि सद्गुणों का समावेश होता है। महावीर के ही अनुयायी महावीर के शब्दों से शास्त्रीय पुराणों के

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

नाम से अहिंसा का विकृत अर्थ करें यह पूज्य श्री सहन न कर सके। 'मत मार कहे तेने पाप अठारह लागे जी' ऐसे विचार मारवाड़ की रेतीली शुष्क भूमि में घर किये हुए हैं यह बात पूज्य श्री की आत्मा सह न सकी। इस संसार विश्व में तेरह पंथी साधु साध्वियों के सिवा अन्य किसी भी प्राणी को अन्न दान जल दान या किसी भी प्रकार की सहायता देना एकान्त पाप है ऐसा सिद्धान्त भी पूज्य श्री की आत्मा सहन न कर सकी और मानवता के नाते दया और दान की पुष्टि के लिए खुले आम पूज्य श्री ने कमर कसी। बीकानेर के व्याख्यानों में प्रसंग प्रसंग पर पूज्य श्री शास्त्रीय पुराणों से दया दान की पुष्टि करते थे।

निकट सहवास का चेप

एक दिन पूज्य श्री के समक्ष एक भाई ने शंका रखी कि दानवीर भैरोंदानजी सेठिया ने विद्यालय तथा पाठशाला कायम कर रखी हैं। विद्यालय के तथा पाठशाला के छात्र पास की गली में पेशाब करते हैं जिससे जीवोत्पत्ति होती है। विद्यालय के छात्र स्नान करते हैं जिससे अप्काय के अनेक जीवों की हिंसा होती है। इनके भोजनादि बनाने में भी तेजःकाय की हिंसा होती है। इस प्रकार सेठियाजी विद्यालय कायम करके पाप के भागी बन रहे हैं। यह शंका एक स्थानकवासी भाई की तरफ से सुनकर पूज्य श्री ने व्याख्यान में इसका जैन दृष्टि कोण से विस्तार पूर्वक

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

समाधान किया। पूज्य श्री ने कहा, भाइयों! बताओ, यदि ये छात्र सेठियाजी के विद्यालय में न पढ़ते होते और अपने घर होते तब भी ये पेशाब करते, स्नान करते, भोजन बनाते या बना हुआ खाते या नहीं? स्नान पेशाब की बात आगे धरके दया और दान को उड़ा देना ठीक नहीं है। तुम लोग दया दान के विरोधियों के पड़ोस में रहते हो अतः ऐसे कुविचार आना स्वाभाविक है। ऐसी शंका भी स्वाभाविक है। सेठियाजी पेशाब कराने या स्नान कराने के लिए छात्र नहीं रखते मगर विद्यादान—ज्ञानदान देने के लिए रखते हैं। इनकी भावना की तरफ खयाल करो। पेशाब स्नानादि शरीर के धर्म हैं, मनुष्य जहां कहीं रहेंगे करने ही पड़ेंगे।

खद्दर के विषय में

पूज्य श्री अपने व्याख्यानों में खादी पहनने के लिए उपदेश दिया करते थे। मारवाड़ की भूमि में खास खयाल रखकर, भाषा समिति का उपयोग रखकर पूज्य श्री खद्दर का समर्थन करते थे। 'खद्दर का उपदेश देना सावद्य उपदेश है' ऐसा तर्क स्वधर्मियों तथा विरोधियों की ओर से उठाया जाता हो रहता था। जिसका पूज्य श्री जैनशैली से इस प्रकार खंडन करते थे।

भाइयों! मैं नहीं कहता कि तुम खद्दर पहनो! मैं खद्दर के

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

लिए आज्ञा नहीं करता। साधु धर्म कार्य के सिवा किसी भी बात की आज्ञा नहीं कर सकते। 'पुष्प पांखडी ज्यां दुभाय, जिनवर नी नहीं आज्ञा त्यांय' एक पुष्प की पाँखुड़ी को कष्ट हो ऐसे कार्य में भी जैन साधु आज्ञा नहीं कर सकता तो मैं तुम्हें खद्दर पहनने की आज्ञा कैसे करूं, मगर एक बात है। सत्य और असत्य का, हिंसा और अहिंसा का, अल्पारम्भ और महारम्भ का विवेक कराना साधु का कर्त्तव्य है। अगर साधु यह कर्त्तव्य न निभाये तो वह कर्त्तव्यच्युत होता है। किस कार्य में अल्प पाप है और किस में महा पाप यह बताना साधु का कर्त्तव्य है। फिर आप लोग स्वयं निर्णय करलो कि हम क्या करें और क्या नहीं। खद्दर की उत्पत्ति में अल्पारंभ है।

एक ग्रामवासी नीम की शीतल छाया में मुक्तवायु के प्रसार में स्वतंत्रता पूर्वक चरखा कातता है, ताने-बाने जोड़कर वस्त्र बुनता है और अपने बाल बच्चों के साथ रह कर सुख पूर्वक जीवन यापन करता है। देश का पैसा देश में रहता है। किन्तु मीलों में कपड़े कैसे बनते हैं सो आप लोग जानते ही हो।

ग्रामवासी बेचारा अपने बाल्बच्चों को छोड़कर शहर की गन्दी गली में गटर और पेशाब घरके पास अन्धकार व अशुद्ध हवा युक्त छोटीसी खोली में रहता है और दिन में या रात में दस घंटे वैशाख ज्येष्ठ की प्रदीप्त गरमी में टीन की छतों के नीचे भेड़ बकरों की भांति अपने अन्य साथियों के साथ खून का पानी करता हुआ

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:35 PM

मील में कार्य करता है। उस बेचारे के परिश्रम से ये पतले और महीन कपड़े बनते हैं। तथा इन कपड़ों पर चरबी लगती है जो कि गाय भैंस आदि पशुओं को पहले लकड़ी से पीट कर उनका चमड़ा शिथिल कर दिया जाता है और बाद में उन पशुओं को मार कर तय्यार की जाती है। ऐसी चरबी के सिंचन से आपके ये वस्त्र बने हैं। दूसरी बात मील के सब यन्त्र विदेश से आये हुए हैं।

अतः एक रुपये के पीछे दस आने भारत के बाहर चले जाते हैं, यदि भारतीय मील के ही बने हुए वस्त्र हों किन्तु विदेश के बने वस्त्र पहनने से तो पूरा रुपया ही बाहर चला जाता है। इस प्रकार देश की गरीबी दिनोंदिन बढ़ती जाती है। विदेशी व देशी मीलों के चर्बीयुक्त या बिनाचर्बी के वस्त्र पहनने वाले देश के प्रति द्रोह करते हैं। उनकी इस अज्ञानता से देश बरबाद हो रहा है। परतंत्रता छाई हुई है। अब आप लोग निर्णय करलें कि हाथकता बुना वस्त्र पहनना अच्छा है या विदेशी वस्त्र। मैं किसी के लिये आज्ञा नहीं करता। मेरी तो आज्ञा है कि आप लोग साधु हो जाओ। ताकि सब प्रकार की झंझट से छुट जाओ। किन्तु यदि गृहस्थी में रहते हो तो गृहस्थी कैसे सुन्दर बने, तुम्हारी गृहस्थी अल्पपाप वाली कैसे बने यह बताना साधु का कर्त्तव्य नहीं है तो क्या दूसरे का कर्त्तव्य है? तुम्ही बताओ।

खद्दर के विषय में इस प्रकार की सचोट वाणि सुनकर मेरा

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

मन खद्दर के पक्ष में होगया। मन का समाधान हो चुका था किन्तु आंखों का समाधान हुए बिना पूरा असर नहीं होता। पूज्य श्री केवल व्याख्यान झाड़ कर वाणि विलास ही नहीं करते थे किन्तु जैसा उपदेश करते थे वैसा आचरण भी करते थे। इनकी खद्दर और चोलपट्टा शुद्ध हाथ कते बुने सूत के बने हुए थे और ऐसी बढ़ी खद्दर उनके बूढ़े शरीर पर देखकर आंखों को भी समाधान होगया और सेठिया विद्यालय में सब से पहले मैंने विदेशी टोपी छोड़कर खद्दर की टोपी पहनना प्रारंभ किया। बाद में धीरे २ इस का प्रचार बढ़ता गया। बीकानेर के बहुत से कलकत्तिया अमीर लोग भी पूज्य श्री के तर्कपूर्ण सार गर्भित व्याख्यान के असर से शुद्ध खद्दर धारी बन गये। बीकानेर में ही नहीं किन्तु भारत भर में हमारी समाज के बहुत से धनी मानी सेठ खद्दर धारण करते हैं उस में पूज्य श्री के उपदेश का फल स्पष्ट मालूम पड़ता है। हमारी पड़ोसी सम्प्रदायों की अपेक्षा हमारा समाज विशेष रूप से खद्दर को अपनाता है इसमें पूज्य श्री का ही प्रभाव है। हमारी समाज के ऐसे सैंकड़ों लक्षाधिपतियों को मैं जानता हूं जिन्होंने पूज्य श्री के व्याख्यानों की बदौलत ही खद्दर पहनने का सौभाग्य प्राप्त किया है। बहुत से श्रावकों ने तो जीवन पर्यन्त के लिए विदेशी वस्तुओं का त्याग किया है। इस प्रकार पूज्य श्री ने जैन धर्म के दृष्टि बिन्दु को समक्ष रखते हुए भारत की ऐसी अमूल्य सेवा की है जो इतिहास के

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

पन्नों में अमर रहेगी। पूज्य महात्मा गांधीजी के विशाल कार्य क्रम में परोक्ष रूप से पूज्य श्री ने बहुत हाथ बटाया है और देश की अपूर्व सेवा की है।

आत्म ज्योति जगाने के लिये ध्यान एवं प्रार्थना.

शरीर धर्म से ऊपर उठकर आत्मधर्म की तरफ कदम रखने के लिये अनेक बाह्य साधनों की आवश्यकता होती है। आसनादि कर के शरीर को काबू में करना और इन्द्रियों को वश कर के मन को आत्मा की आज्ञानुसार वशवर्ती बनाये रखना, मुनिधर्म के लिये आवश्यक है। पूज्य श्री की आसनबद्ध ध्यान मुद्रा देखकर चित्तको बड़ी शांति मिलती थी। उनकी उस मुद्रा को देखकर नास्तिक के चित्त में भी एकबार आस्था जाग्रत हो जाती थी। उनके ईश्वर विषयक भाषण सुनकर जितना असर न होता था उतना उनकी प्रातः कालीन ध्यान मुद्रा देखकर चित्त को वास्तविक समाधान होता था। 'गुरोस्तु मौनं, शिष्यास्तु छिन्न संशयाः' गुरु के मौन से ही शिष्यों के संशय छिन्न हो जाते हैं। यह बात पूज्य श्री की ध्यानावस्थित आकृति के साथ ठीक मेल खाती है। लोग प्रातःकाल मुनिदर्शनार्थ जाते हैं। यदि पूज्य श्री के जैसी आसनयुक्त ध्यान मुद्रा के भावों परिणामों-अध्यवसायों के उतार चढाव के साथ की मुखमुद्रा के दर्शन हों तभी दर्शन सार्थक है। व्याख्यान के आदि में श्रावक विनयचन्द्रजी

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

दिनों बीकानेर पूज्य श्री के विराजने से भारत में ख्यात हो रहा था। त्रिपाठीजी पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित हुए और अपने संगृहित खजाने में से चुने हुए कुछ गीत पूज्य श्री को सुनाये, जिन्हें सुनकर पूज्य श्री बहुत अधिक प्रसन्न हुए। उन गीतों में भारतीय संस्कृति कूट कूट कर भरी हुई थी। पूज्य श्री ने गीतों की बातों को मद्दे नजर रखकर दूसरे दिन का व्याख्यान दिया था। भारत की धर्म-प्रधान संस्कृति का आधुनिक संस्कृति के साथ तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन किया और ग्रामवास ही शान्तिमय स्थल है ऐसा कहा। नगर जीवन और ग्राम जीवन पर एक नजर डालकर नगर जीवन की हानियाँ और ग्राम जीवन की विशेषताएं बताई।

पं० रामनरेश त्रिपाठी जी ने व्याख्यान में खड़े होकर पूज्य श्री के ग्राम्य गीतों के प्रेम की भूरि २ प्रशंसा की और कहा कि भारत में ऐसे संतों के होने से ही हम जीवित हैं। दो दिन तक त्रिपाठी जी अपने गीत पूज्य श्री को सुनाते रहे थे। मैं भी सुनने के लोभ में पास ही बना रहता था। ग्राम्यगीतों के प्रेम से पूज्य श्री का ग्राम्यजनों के प्रति अगाध प्रेम स्पष्ट मालूम पड़ता था। पूज्य श्री का बचपन ऐसे ही किसी ग्राम में व्यतीत हुआ था अतः ग्राम प्रेम अनिवार्य था। अनेक नगरों में चातुर्मास काल व्यतीत करने से नागरिक जीवन से पूज्य श्री परिचित थे। उन्हें गांवों में शान्ति अनुभव होती थी। ग्रामीण जनों की निष्कपटता, सादा

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

दिनों बीकानेर पूज्य श्री के विराजने से भारत में ख्याल हो रहा था। त्रिपाठीजी पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित हुए और अपने संगृहित खजाने में से चुने हुए कुछ गीत पूज्य श्री को सुनाये, जिन्हें सुनकर पूज्य श्री बहुत अधिक प्रसन्न हुए। उन गीतों में भारतीय संस्कृति कूट कूट कर भरी हुई थी। पूज्य श्री ने गीतों की बातों को मद्दे नजर रखकर दूसरे दिन का व्याख्यान दिया था। भारत की धर्म-प्रधान संस्कृति का आधुनिक संस्कृति के साथ तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन किया और ग्रामवास ही शान्तिमय स्थल है ऐसा कहा। नगर जीवन और ग्राम जीवन पर एक नजर डालकर नगर जीवन की हानियाँ और ग्राम जीवन की विशेषताएं बताई।

पं० रामनरेश त्रिपाठी जी ने व्याख्यान में खड़े होकर पूज्य श्री के ग्राम्य गीतों के प्रेम की भूरि २ प्रशंसा की और कहा कि भारत में ऐसे संतों के होने से ही हम जीवित हैं। दो दिन तक त्रिपाठी जी अपने गीत पूज्य श्री को सुनाते रहे थे। मैं भी सुनने के लोभ में पास ही बना रहता था। ग्राम्यगीतों के प्रेम से पूज्य श्री का ग्राम्यजनों के प्रति अगाध प्रेम स्पष्ट मालूम पड़ता था। पूज्य श्री का बचपन ऐसे ही किसी ग्राम में व्यतीत हुआ था अतः ग्राम प्रेम अनिवार्य था। अनेक नगरों में चातुर्मास काल व्यतीत करने से नागरिक जीवन से पूज्य श्री परिचित थे। उन्हें गांवों में शान्ति अनुभव होती थी। ग्रामीण जनों की निष्कपटता, सादा

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

खान पान, भोजन, भाषा, वेशभूषा से पूज्य श्री प्रसन्न थे। संतों को निराडम्बरता ही प्रिय होती है।

समाज का साथ

अजमेर निवासी स्वर्गीय अर्जुनलालजी सेठी से बहुत से पाठक परिचित होंगे। एक जमाना था जब भारत में सेठीजी का दौर दौरा था। सेठी जी के विचारों की उग्रता से सब कोई परिचित हैं। व्याख्यान के पश्चात् अन्य मुनि जब तक आहार पानी लेने चले जाते तब तक पूज्य श्री को समय रहता था। और उस समय का उपयोग पूज्य श्री कभी २ खास व्यक्तियों के साथ वार्तालाप में भी करते थे। हम लोग (मैं, पं० रंगनलाल जी चपलोत व पं० इन्द्रचन्द्र जी) उस समय पूज्य श्री के पास सद्ग्रन्थ का अध्ययन करते थे। हम सब पढ़ने के लिए बैठे थे कि सेठी जी आ गये और पूज्य श्री से वार्तालाप करने लगे। इसके पहले दिन ही हम लोग सेठिया विद्यालय में सेठीजी का भाषण सुन चुके थे। उन की बातों में रस मालूम पड़ता था। सेठीजी ने पूज्य श्री से कहा, महाराज आप कब तक इस मुर्दा समाज के पीछे पड़े रहोगे। आप आगे क्यों नहीं बढ़ते। आप जैसे समर्थ आचार्य इस छोटे से दायरे में अपने समय शक्ति व ज्ञानबल का उपयोग करें यह ठीक नहीं मालूम होता।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

जब तक पूज्य श्री की ओर से उत्तर न सुना मुझे सेठी जी का प्रश्न अच्छा लगा और मन में आशा की कि पूज्य श्री सेठीजी की बात का समर्थन करेंगे। किन्तु उत्तर कुछ और ही था। पूज्य श्री ने कहा, सेठीजी सुनिये। समाज अभी तक बच्चा है और बच्चे को साथ लिए चलने के लिए अपनी चाल को भी मन्द करनी पड़ती है। बच्चे की अंगुली पकड़ कर धीरे २ उसको साथ लेकर चलना पड़ता है नहीं तो बच्चा पीछे रह जाय और हम आगे निकल जाय। सेठीजी ने कहा इसका अर्थ तो यह हुआ कि हम लोग एक बच्चे के पीछे अपना विकास रोक दें और अपनी तेजगति को मन्द बना दें, यह तो कतई वांछनीय नहीं है। पूज्य श्री ने कहा हम लोग विचारों में तेजगति रख सकते हैं मगर आचार में तो समाज के साथ रहकर ही कार्य करना पड़ता है। समाज की गति को तीव्र बनाने के लिए भरसक प्रयत्न करते रहना ही हमारा कर्त्तव्य है। यदि समाज को छोड़ कर के व्यक्तिगत साधना में ही लग जाना हो तो बात दूसरी है। आपने तो हिन्दु धर्मका गहरा अध्ययन किया है।

लोक संग्रह के लिए कुल कुल्य व्यक्ति को भी कार्य करना पड़ता है। गीता का ऐसा उपदेश है। समाज की गति को दिनों दिन अपने उपदेश व आचरण से बढ़ाते रहना चाहिए। यह तो कतई वांछनीय नहीं है कि एक व्यक्ति समाज को विचारों की तीव्रता के कारण छोड़ दे। आज हम देखते हैं कि बहुत से अधकचरे विचार

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

वाले सुधारक एक दम समाज को छोड़ बैठते हैं, जिससे समाज भी उनको सम्मान देना छोड़ देती है और वे इस प्रकार अनादृत हो कर हतोत्साह हो जाते हैं। न अपना कल्याण साध सकते हैं और न दूसरों का। पूज्य श्री का उत्तर सुन कर मेरे दिमाग़ में यह बात घर कर गई कि समाज की सेवा करने के लिए समाज को साथ रखना चाहिये। यदि समाज विचारों को सहन न कर सकता हो तो भी धीरे २ समाज को आगे बढ़ाने का यत्न करते रहना चाहिये। समाज से चिढ़ कर उसे छोड़ देना तो ठीक नहीं। समाज को साथ लेकर चलने में व्यक्तिगत विकास कभी नहीं रुक सकता बल्कि परिपक्व हो जाता है।

मालवीयजी का आगमन

अपने जीवन में स्वपुरुषार्थ के बल से उन्नति करके आगे बढ़े हुए लोगों में शिरोमणि, हिन्दु युनिवर्सिटी के संस्थापक, हिन्दु धर्म के महान् हितैषी, भारत भूषण पं० मदनमोहन मालवीयजी काशी विश्व विद्यालय के लिए दूसरे करोड़ रुपये की फण्ड करने के सम्बन्ध में बीकानेर पधारे थे। पूज्य श्री से मिलने की उनकी पूर्ण इच्छा थी, अतः स्टेशन से सीधे ही श्री आनन्दरामजी श्रीश्रीमाल के कटले में जहाँ कि पूज्य श्री व्याख्यान दे रहे थे और

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:36 PM

हजारों की संख्या में भावभेदनी व्याख्यान श्रवण कर रही थी, मालवीयजी पधारे ; व्याख्यान श्रवणार्थ बैठ गये ।

पूज्य श्री का धाराप्रवाही, देश की दयनीय दशा का सच्चा चित्र उपस्थित करने वाला करुणाप्रधान वक्तृत्व करीब डेढ़ घण्टे तक चलता रहा और मालवीयजी बड़े चाव से सुनते रहे । मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि उस दिन पूज्य श्री ने भारत की गरीबी का ऐसा करुणापूर्ण नक्शा खींचा था कि श्रोताओं की आंखों से अश्रु निकल पड़े थे ।

श्री महादेव गोविन्द रानडे पूना का दृष्टान्त उस व्याख्यान का खास सार भूत भाग था । पूज्य श्री ने कहा, एक दिन रानडे अपनी बैठक में बैठे हुए थे । सड़क पर एक कुत्ता कै कर रहा था । इतने में एक गरीब भिखारी आया और कुत्ते को दूर हटा कर कुत्ते के वमन किये हुए पदार्थ को खा गया । यह दृश्य देखकर रानडे को भारत की जनता का कल्याण करने के लिए अन्तर्प्रेरणा हुई और उन्होंने शेष जीवन भारत के उद्धार कार्य में समर्पित कर दिया ।

इस प्रकार पूज्य श्री ने अनेक दृष्टान्त देकर विशाल दृष्टिकोण से मनुष्य मात्र की सेवा करने का ऐसा मार्मिक उपदेश दिया था कि वह दिन सदा के लिए स्मरणीय बना रहेगा । सारे चातु-

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

मास तक मैं नियमित रूप से व्याख्यान सुनता रहा था किन्तु आज के व्याख्यान की छटा कुछ निराली ही थी। व्याख्यान पूरा होने पर मालवीयजी महाराज खड़े हुए और नीचे लिखे अनुसार अपनी मधुरशैली में कहने लगे।

पूज्य महाराज श्री तथा उपस्थित श्रोताओं ! मैं कुछ मिनिट के लिए ही यहां उपस्थित रहने का विचार करके आया था किन्तु पूज्य श्री की वाणि ने मुझे बांध दिया और डेढ़ घण्टे तक टक-टकी लगाकर भाषण सुनता रहा। मैंने खयाल किया था कि ऐसे ही कोई साधु होंगे। किन्तु व्याख्यान सुनकर मेरे दिल पर गहरा असर हुआ। भारत की स्थिति का पूज्य श्री ने जैसा चित्र खींचा है वह तादृश है।

मैं अपने अनुभव व जानकारी के बल से कह सकता हूं कि भारत में पूज्य श्री के समान वक्ता दो चार ही है। ऐसे वक्ता व चारित्र शील साधुओं के कारण ही भारत अपना मस्तक ऊंचा रख सकता है। फिर मालवीयजी ने विश्वविद्यालय को दान देने की अपील की। यह सब दृश्य मेरा आंखों देखा कानों सुना है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

[२१]

शंकाओं का समाधान व आत्म-सिद्धि

दूसरे के मन में रही हुई शंका जब तक दूर न हो जाय तब तक पूज्य श्री को चैन नहीं पड़ता था। एक घटना पाठकों के समक्ष उपस्थित करता हूँ। उस समय हम लोग 'सेठिया विद्यालय' में न्यायतीर्थ का अध्ययन करते थे। वक्तृत्व शक्ति की वृद्धि के लिए विद्यालय में सभाएं हुआ करती थी और कभी २ वाद-विवाद भी हुआ करता था। मुझे व मेरे सहपाठी पं० श्यामलालजी जैन को 'आत्मा है या नहीं' विषय पर शास्त्रार्थ करने की आज्ञा हुई और यह शास्त्रार्थ पूज्य श्री की सेवा में होना ऐसा भी कह दिया गया था। पं० श्यामलालजी का पक्ष था 'आत्मा है और वह मरने के बाद भी कायम रहता है'। मेरा पक्ष था ऐसा आत्मा नहीं हो सकता जो शरीर के जलाने पर भी कायम रहता हो। शरीर के साथ ही आत्मा का अस्तित्व उड़ जाता है। पंच भूतों की विचित्र मिलावट में एक नवीन शक्ति उत्पन्न हो जाती है और उसे ही आत्मा कहते हैं। जब मिट्टी का शरीर मिट्टी में मिल जाता है तब आत्मा भी नष्ट हो जाता है।

मेरे साथी ने ग्रंथों के अनेक प्रमाण इकट्ठे करके खूब तय्यारी की थी और मैंने भी। मेरे लिए मार्ग साफ था। मैं प्रत्यक्ष वादी

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

था। चमड़े की आंखों से जो दिखाई दे उसे ही मानने को मैं तय्यार था। आत्मा अनुभव के बिना माना नहीं जा सकता। और इसी कारण से जब पूज्य श्री की उपस्थिति में सेठियाजी की कोटड़ी में हम लोगों का वाद् कलह हुआ, उस में मेरा पक्ष मजबूत रहा। मैं कोई बात स्वीकार ही नहीं करता था, जब तक कि वह इन्द्रिय गम्य बनाकर दिखा न दी जाय। उस वक्त तत्वज्ञ बा० मो० शाह तथा स्वर्गीय धर्मभूषण दुलभजी त्रिभुवनजी जौहरी भी उपस्थित थे। जब हम लोगों की बातों में कुछ सार नहीं देखा गया तो पूज्य श्री मुझे अपने पास बुलाकर समझाने लगे।

देखो, मैं बोलता हूं और तुम सुनते हो। यह सुनने वाला ही आत्मा है। आंखे तो चमड़े की हैं, कान भी चमड़े के बने हैं। ये देख सुन नहीं सकते। ये तो देखने सुनने के लिए आत्मा के भौतिक साधन मात्र हैं। मैं अपना कक्का घोटता ही रहा और तर्क करता रहा। पूज्य श्री ने मुझे समझाने की बहुतेरी कोशिश की मगर मैंने उस वक्त 'आत्मा अमर' है यह बात स्वीकार नहीं की। पूज्य श्री के मन में यह खयाल आगया था कि मैं नास्तिक हो गया हूँ और इसी लिए दूसरे दिन के व्याख्यान में 'आत्म सिद्धि' पर ही भाषण किया। इसके कुछ काल बाद जब मैं भीनासर व्याख्यान श्रवणार्थ गया तब भी मुझे देखकर पूज्य श्री ने आत्मा की सिद्धि के लिए प्रमाण उपस्थित किये और अकाट्य—युक्तियों से शरीर के नष्ट

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

हो जाने पर भी आत्मा कायम रहता है यह सिद्धान्त स्थापित किया। मैंने पूज्य श्री से अर्ज की कि पूज्यवर! मैं तो आस्तिक हूं। मेरे में कूट२ कर आस्तिकता भरी है। केवल समझने के लिए आपसे तर्क करता रहा था। मेरे कहने से पूज्य श्री को शांति मिली और कहा कि अच्छा हुआ। इस बहाने से आत्मा की सिद्धि के लिए बोलने का प्रसंग आ गया।

इस भौतिक जमाने में आत्मा की सिद्धि करना भी दुष्कर हो गया है। लोग अपने छोटे से गज से सब वस्तुओं को मापना चाहते हैं यह उनकी भूल है। पांचों इन्द्रियाँ व मन पौद्गलिक हैं और इन से आत्मा-दर्शन करने की कल्पना करना महज भूल है।

आत्मा को देखने के लिए अनुभव प्रमाण—स्वतः प्रमाण की जरूरत है। कैसा कुटिल काल है कि 'हम हैं या नहीं' इस में भी लोगों को शंका है। पूज्य श्री के अन्दर आस्तिकता श्रद्धा अटूट थी। वे तर्कवादी तो थे किन्तु उनके तर्कवाद के पीछे अटूट श्रद्धा थी। मैंने अपने हृदय में पूज्य श्री का मेरे प्रति दयालुता-कृपालुता के लिए अनेक धन्यवाद दिए। इस प्रसंग से उन के प्रति मेरी भक्ति अधिक बढ़ गई।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

[२७]

भ्रामक सिद्धान्तों का प्रतीकार

बीकानेर के चातुर्मास में एक खास बात यह देखी गई कि उस समय पूज्य श्री की एक ही धुन थी और वह यह कि दया और दान के विषय में लोगों के गलत विचार दूर हो जाय। वे प्रत्येक प्रसंग पर करुणा-दया व दान की पुष्टि करते थे। उनकी यह भावना थी कि इस भ्रामकश्रद्धा का उन्मूलन करने के लिए अनेक उपदेशक तय्यार किये जाँय और वे गाँव २ शहर २ जाकर अहिंसा का झण्डा फहरायें। इसी बात को ध्यान में रखकर सामाजिक धार्मिक—साम्प्रदायिक अनेक कार्य होते हुए भी व्याख्यान के बाद एक घंटा हम लोगों को 'सद् धर्ममंडन' बढ़ाने के लिए खर्च करते थे। उनकी समझाने की शक्ति बड़ी सुगम थी। दोपहर को भी 'अनुकम्पा विचार' की ढाले गायन के साथ सब लोगों को समझाते थे।

पूज्य श्री की इच्छा थी कि प्रत्येक व्यक्ति दया दान सम्बन्धी कुतर्कों का मुँह तोड़ उत्तर दे सके मुझे पूज्य श्री से आचारांग सूत्र पढ़ने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बीकानेर का चातुर्मास पूरा करके दया व दान की पुष्टि करने के लिए पूज्य श्री ने सरदार शहर की ओर विहार किया। उन्हें जो धुन लगती उसे वे पूरी

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

करते । जो व्यक्ति अपनी धुन का पक्का होता है वही कुछ विशेष कार्य कर सकता है । कुछ डरपोक स्वभाव के व्यक्ति इसका विरोध भी करते थे कि नाहक रगड़ा मोल लिया जा रहा है ।

पूज्य श्री कहते थे जहाँ तुम लोगों को दो पैसे की हानि होती है वहाँ झट लड़ने को उतारू हो जाते हो । तुम्हारे पवित्र दया दान के सिद्धान्तों पर धूल लग गया है उसको दूर करने की जब बात आती है तब बड़ी समझदारी की बातें करने लग जाते हो । तुम सच्चे हृदय से अनासक्त भाव पूर्वक रागद्वेष लाये बिना एकान्त करुणा बुद्धि से दया दान की पुष्टि करते रहो फिर चाहे सामने वाला कुछ भी खयाल करे । डरपोक वृत्ति को छोड़ दो ।

सरदार शहर के संस्मरणों का जिक्र करने के पूर्व भीनासर की कुछ बातें याद आ गई हैं अतः उन्हें पहले लिख दूं । ये तो बिखरे मोती हैं । जैसे २ जो बातें स्मृतिपट पर आती है लिखता हूँ । मेरे सामने सिवा मेरे मस्तिष्क के और कोई सामग्री नहीं है । नाम लेने के लिए भी कोई पुस्तक नहीं है जिसे पढ़ कर मैं अपनी स्मृति को ताजा बना लूं ।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

जैनागमों के मननीय वर्णन

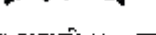

पूज्य श्री ब श्री गणेशलालजी म० सा० भीनासर विराजते थे। एक दिन रात को हम लोग वहीं रह गये। वे दिन हमारे दिमागी उथलपुथल के थे। शास्त्रों की प्रत्येक बात पर जो श्रद्धा रखता है वह समकिती है और जो किसी एक बात पर भी अश्रद्धा रखता है वह मिथ्यात्वी है। हमें मिथ्यात्वी रहना अच्छा न लगता था और शास्त्रों की कुछ बातों पर अश्रद्धा भी थी जिसे दूर करना कठिन हो गया था। माकूल समाधान कहीं से मिलता न था। बल्कि अश्रद्धा के कारण विशेष उपस्थित होते थे। सर्वज्ञ प्रणीत आगमों में यह विवाद क्यों? अपनी शंकाओं को लेकर पूज्य श्री की सेवा में गये। पूछा, पूज्यवर! हमें दो बातों के विषय में शंका है जिसे आप दूर कीजिये।

१—आधुनिक वैज्ञानिकों ने पृथ्वी का भ्रमण करके यह निर्णय किया है कि पृथ्वी गोल है और सूर्य के इर्दगिर्द चक्कर काटती है। नाक की सीध में चले जाने पर घूम घूमाकर वह व्यक्ति मूल स्थान पर ही उपस्थित हो जाता है। जापान हिन्दुस्तान के पूर्व में है और अमेरिका पश्चिम में। किन्तु जापान व अमेरिका आमने सामने हैं।

२- हमारे मान्य बत्तीस आगमों में अनेक जगह शाश्वती प्रतिमाओं का जिक्र आया है। द्रौपदी ने पूजा की है। क्या पहले

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

मूर्तिपूजा चालू थी ? क्या ढोंग बढ़ जाने से लोंकाशाह ने विरोध किया था । पहले प्रश्न का उत्तर अति संक्षेप में पूज्य श्री ने इस प्रकार फरमाया—

देखो एक बात तुम्हें पहले समझ लेनी चाहिये और उसके समझ लेने से तुम्हारा प्रश्न अपने आप हल हो जायगा । जैन आगम आध्यात्मिक आगम हैं । भौगोलिक, खगोलिक आगम नहीं हैं । हमारे तीर्थङ्कर गणधरों ने आत्म तत्त्व का तथा आत्मा के साथ लगी हुई वैभाविक परिणतियों का आगमों में वर्णन किया है । आत्मा की स्वाभाविक और वैभाविक दोनों प्रकार की परिणतियों का वर्णन करते हुए आनुषंगिक रूप से अन्य बातों का वर्णन किया है ।

हमारे आगम आत्म स्वरूप का तथा उसके साथ लगे हुए कर्म और तज्जन्य अवस्थाओं का प्रतिपादन करते हैं । आत्मा परमात्मा का वर्णन करते हुए प्रासंगिक रूप से अन्य बातों का वर्णन है । यह वर्णन गौण है । जैन आगमों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है, आत्मा से परमात्मा बनने की साधना प्रणालिका बताना ।

भौगोलिक विषय जैसा जैनागमों में बताया गया है वैसा ही हिन्दु धर्म ग्रन्थों व बौद्ध पिटकों में भी है । उस वक्त का वर्णनक्रम ऐसा रहा होगा । इसके सिवाय जैनागमों में भौगोलिक एवं खगोलिक जो भी वर्णन है उसको समझने व समझाने के साधन नहीं है,

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:37 PM

जिसके द्वारा सिद्ध किया जासके वास्ते आस्ता से मानलेना ही श्रेष्ट है कि अतिशय ज्ञानी ऐसा वर्णन असम्बद्ध क्यों करें।

दूसरे प्रश्न के लिए फरमाया-तुम लोग इतिहास पढ़े हो। बुद्ध निर्वाण के बाद उनके भक्तों ने उनकी राख पर स्मारक बनाया और धीरे २ मंदिर मूर्ति का आविष्कार हुआ। लोग उधर आकर्षित होने लगे। यह देख जैनाचार्यों ने भी साधारण जनता को विधर्मी होने से बचाने के लिए मंदिर मूर्तियों का सहारा लिया। नंदीश्वर द्वीप आदि में शाश्वती प्रतिमाओं का जिक्र है। यह क्यों है? गणधरों की सभी बातें हम समझ नहीं सकते। भौगोलिक रचना व्यावस्था में अपने मन को कायम रखने के लिए भी हो सकती है। यह संक्षिप्त उत्तर सुनकर हम लोग संतुष्ट हो गये थे। उक्त दोनों प्रश्नों का यही सच्चा उत्तर है।

ध्यान शक्ति एवं आचार की बड़ कदर

हमारी समाज के साधुओं का आचार विषयक तथा ज्ञान विषयक स्टेण्डर्ड गिरता जारहा है यह कौन नहीं अनुभव करता। पूज्य श्री अपनी आज्ञा में विचरने वाले संत मुनिराजों व महासतियों के आचार विचार पर कड़क नजर रखते थे। पोल को वे सहन नहीं कर सकते थे। उनकी कड़कता कभी कभी अखरने लगती थी किन्तु परिणाम में हितकारी होने

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

से लाभ कारक ही सिद्ध हुई है। साधुओं के लिए शास्त्रों में स्वाध्याय व ध्यान करने पर बहुत भार दिया गया है। उनके दैनिक कर्त्तव्य में स्वाध्याय व ध्यान को दिन व रात्रि उभय में स्थान दिया गया है।

आजकल कितने मुनि ध्यान करते हैं यह हम सब जानते है। ध्यान करने की परम्परा टूट ही गई है। पूज्य श्री सदा पिछली रात को उठकर ध्यान करते थे। व्याख्यान में वे कहते भी थे कि आज पिछली रात को मुझे अमुक विषय का समाधान इस प्रकार सूझा है। उनकी विचार शक्ति इतनी उच्च दर्जे की थी इस में भी ध्यान शक्ति ही कारण है। प्रति सोमवार वे मौन रखते थे यह तो प्रसिद्ध ही है। ध्यान व मौन साधुओं का भूषण है। पूज्य श्री की इस बात का प्रभाव अन्य सन्तों पर भी पड़ा है। पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० तथा पूज्य श्री हस्तिमलजी म० सा० भी ध्यान व मौन रखते हैं। क्या ही अच्छा हो अन्य मुनिजन भी इस परम्परा का पालन करने लगें।

सरदार शहर के संस्मरण

दया व दान का झंडा फहराने के लिए पूज्य श्री सरदार शहर पधारे। मान्यवर पूज्य भैरोंदानजी सा० सेठिया भी सदल बल पूज्य श्री के दर्शनार्थ सरदार शहर पधारे थे। हम लोगों की व्याख्या-

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

तीर्थ की परीक्षा सन्निकट थी। पं० श्री बेलसिंहजी न्याय व्याकरण तीर्थ को सरदार शहर ले जाना आवश्यक था। कारण कि इस बात की संभावना थी कि शायद तेरहपंथ संप्रदाय के साथ दया दान विषय में शास्त्रार्थ हो।

पण्डितजी के साथ हम लोगों को भी सरदार शहर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गये तो इसलिए थे कि परीक्षा की तय्यारी में पं० जी की अनुपस्थिति में बाधा न पहुँचे और वहाँ पाठ चलता रहे। मगर जहाँ पूज्य श्री स्वयं विराजमान हो, नये २ विषयों पर व्याख्यान में प्रकाश डाला जाता हो शंकाकार शंकाएं लेकर आते हों और पूज्य श्री अकाट्य उत्तर देते हों, तथा विरोधीपार्टी के भी आचार्य श्री तथा सैकड़ों साधु हो, वहाँ हम लोगों का पढ़ाई मन कैसे लग सकता था। हम लोग प्रति दिन पूज्य श्री का व्याख्यान सुनते। दोपहर की चर्चा में अवश्यार्थ भाग लेते और धमाल में समय काटते।

पूज्य श्री ने पब्लिक व्याख्यान में शास्त्रार्थ करने के लिए खुला चेलेंज फेंका और सिंह-गर्जना के साथ दयादान के विरोधियों को ललकारा और यह आह्वान किया कि मित्रो! अगर हृदय से करुणा भाव निकाल दोगे तो धर्म ही नहीं रहेगा। विपक्षी पार्टी की ओर से शास्त्रार्थ करने की बात स्वीकृत नहीं हुई किन्तु दोपहर को श्री गोठीजी तथा पं० नेमनाथ आया करते थे और 'भगवान् महावीर ने गोशाले की रक्षा करके भूल की है या नहीं' इस विषय

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

पर चर्चा चलती थी। उस चर्चा के समय पूज्य श्री की दिव्यता, विद्वत्ता, मुँहतोड़ उत्तर, तर्क शक्ति, शासन–जवाबीपन, सत्य के प्रति अटूट निष्ठा आदि गुण स्पष्ट नज़र आते थे। विपक्षियों की तरफ से जब कुतर्क किया जाता तब पूज्य श्री का पुण्य प्रकोप भी देखते ही बनता था। स्वामी दयानन्द सरस्वती की शास्त्रार्थ करने की शक्ति व निडरता प्रसिद्ध है। हम ने उन्हें प्रत्यक्ष नहीं देखा। किन्तु पूज्य श्री की शक्ति उन से कम किसी हालत में नहीं हो सकती।

सत्य सिद्धान्तों का प्रचार

—:*:—

एक दिन हम लोग तेरह पंथ सम्प्रदाय के आचार्य पूज्य कालूरामजी म० सा० के व्याख्यान सुनने गये। हमने अपने कानों से यह बात सुनी—पूज्यजी अपने श्रावकों से ललकार पूर्वक कह रहे थे कि पूज्य श्री जवाहरलालजी के व्याख्यान में मत जाओ। तुम्हें तीर्थंकरों की आज्ञा है। फिर भी कुतूहल के वश होकर, कुछ नवीनता के कारण तथा व्याख्यान की आकर्षक शैली के कारण बहुत से उनके श्रावक पूज्य श्री के व्याख्यान में आ ही जाते थे। उनका व्याख्यान पहले पूरा हो जाता था और पूज्य श्री का देर से। वहाँ से निकल कर टोली इधर आ जाती थी। एक दिन का पूज्य श्री का व्याख्यान अभूतपूर्व था। श्री कृष्ण का कालिया नाग नाथना और उस पर नृत्य करने का दृश्य ऐसा चित्रित किया गया

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

था कि वह हृदय झार्थक मानता था । कृष्ण चरित्र वर्णन की उन की शैली अद्भुत थी । कितना भी प्रौढ़ पंडित क्यों न हो उसे आनन्द आने लगता था । पूज्य श्री भावों के अन्तस्तल में पहुंच जाते थे ।

पूज्य श्री के व्याख्यान में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र सब उमड़ पड़ते थे । पूज्य श्री के भाषणों से उनकी आंखें खुल गई कि उन के पड़ौसियों की कैसी जनहित विरोधी मान्यता है । पूज्य श्री के प्रभाव से कई योग्य व्यक्तियों के खयालात ठीक हो गये थे । इस सब लम्बे वर्णन से मुझे यह कहना है कि यद्यपि पूज्य श्री थली प्रदेश में उतने सफल न हुए थे जितना कि उन्होंने परिश्रम किया था तथापि उनका प्रयत्न प्रशंसनीय—अनुकरणीय था । उनके पश्चात् उनकी स्कीम को जलसिंचन करने वाले हो तभी उनका बोया हुआ पौधा पनप सकता है । महापुरुषों को अमर बनाने का कार्य उनके अनुयायियों का है । पूज्य श्री महापुरुष थे । उन में महापुरुष की सब सामग्री मौजूद थी । केवल उनको जितना चाहिये उतना साथ न मिला था ।

अपनी व्याख्यान धारा में पूज्य श्री स्वतः प्रमाण, आत्मप्रमाण को अधिक मान देते थे । भाइयों, तुम को कोई तलवार उठाकर मारता हो और उस वक्त कोई दयालु व्यक्ति आकर पीछे से तलवार पकड़ ले तो तुम्हें वह तलवार पकड़ने वाला व्यक्ति कितना प्यारा

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

और दयालु मालूम पड़ेगा। वह तुम्हें धर्मात्मा मालूम पड़ेगा पापी कभी नहीं। इसी प्रकार मरते हुए की रक्षा करने वाला कभी पापी नहीं हो सकता।

कुछ लोग ऐसी अटपटी शंकाएं लाते थे कि सुनकर हम लोग मुंझवश में पड़ जाते थे। एक भाई आया और पूछने लगा—महाराज आप दया दया चिल्लाते हो मगर दया में विवेक तो रखना चाहिये। जैन धर्म में विवेक को मुख्य स्थान दिया गया है। एक प्यासे की प्यास बुझाने की तो आप को चिन्ता है मगर पानी के असंख्य मूक निर्बल जीवों की तरफ आपका खयाल क्यों नहीं पहुंचता। कबूतर का पेट भरने की तरफ आपका लक्ष्य है मगर बाजरी के जीवों की तरफ आप दुर्लक्ष्य क्यों करते हो। सबलों के पोषण के लिये निर्बलों की बलि का आप अच्छा उपदेश देते हो। जरा जैन धर्म के सूक्ष्म मर्म को समझो और अपनी मान्यता ठीक कर लो।

यह शंका सुनकर हम लोग बगलें झांकने लगे। किन्तु पूज्य श्री के हाजर जवाबीपन ने उस भाई का एक ही बात में मुँह बंध कर दिया। पूज्य श्री ने कहा अच्छा भाई प्यासे की प्यास बुझाने के लिए कोई निर्दोष गरम पानी पिलाये और कबूतर की भूख मिटाने के लिए बाजरी की सौंधी फूली डाले, तब तो, बताओ कि उसे पाप लगा या पुण्य; उसे धर्म हुआ या अधर्म ऐसा करना तो ठीक है न! यह सुनकर वह व्यक्ति चुप हो गया, कारण कि

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

इसकी मान्यता से तो किसी भी असंयती प्राणी का पोषण करना एकान्त पाप था। पूज्य श्री ने कहा दया और दान को उठादेने के लिए इस प्रकार की कुतर्कें करके भोले प्राणियों को क्यों फंसाते हो ? साफ क्यों नहीं कहते कि रक्षा करना मात्र पाप है।

भीनासर

स्वर्गीय तत्वज्ञ बाड़ीलाल मोतीलाल शाह के सभापतित्व में बीकानेर में स्थानकवासी जैन कॉन्फरेंस का अष्टम अधिवेशन हुआ था। उस समय पूज्य श्री का चातुर्मास भीनासर में था। उसी अवसर पर तपस्वी मुनि केसरीमलजी के २५ उपवास का पूर था। कॉन्फरेंस की जनरल मीटींगें भी कभी २ वहाँ पूज्य श्री विराजमान होते वहाँ होती थीं। पूज्य श्री का प्रभाव स्थानकवासी समाज में बहुत अधिक था। कॉन्फरेंस के कार्यकार लोग पूज्य श्री के भक्त थे। अष्टम अधिवेशन में उपस्थिति की अधिकता पूज्य श्री के कारण ही थी।

बीकानेर के प्रधानमंत्री को योग्य सन्देश

एक दिन बीकानेर के प्रधान मंत्री सर मनु भाई मेहता व्याख्यान में आये हुए थे। सर मेहता साहिब बीकानेर व भीनासर में अक्सर व्याख्यान में आया करते थे। पूज्य श्री के प्रेम ने उन्हें

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

अपनी ओर खींच लिया था। राउन्टेबल कान्फरन्स में जाने के पूर्व सर मेहता सा० पूज्य श्री के आशीर्वाद लेने आये थे। आशीर्वाद के बदले पूज्य श्री ने मेहता सा० से भारत की गरीब जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व करने की बात मांगी थी।

बीकानेर अधिवेशन की तय्यारी में कुछ ढील देखकर श्री दुर्लभजी भाई जौहरी ने व्याख्यान में ही तय्यारी के लिये अपील की थी, जिस पर बीकानेर व भीनासर के लोगों को कुछ बुरा मालूम पड़ा था। पूज्यश्री ने बाद में सबको जौहरीजी की धर्म भावना व समाजोत्थान की लगन की तरफ ही खयाल करने के लिए समझाया था।

तप का महात्म्य

तपस्या के पूर पर तपस्या के विषय में कुछ कहना स्वाभाविक था। पूज्यश्री प्रति दिन कुछ न कुछ तपस्या के विषय में कहते थे। तपस्या से इन्द्रियां शिथिल हो जाती है। मन प्रबल बन जाता है। मन की प्रबलता से आत्म-बल बढ़ता है। तपस्या के के साथ ईश्वर के साथ तादात्म्य-भाव की वृद्धि आवश्यक है। उपवास करके पेट को खुराक न पहुँचाने से विषय मन्द हो जाते हैं। विषयों का सर्वथा क्षय तो ईश्वर साक्षात्कार से ही होता है। द्रव्य तप पर पूज्यश्री भार देते थे मगर भाव तप को भी भूला

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

न देते थे बल्कि कहते थे कि भावतप के होने से ही द्रव्य-तप की सार्थकता है। द्रव्य तप ईश्वर दर्शन के लिए मार्ग साफ करता है और भावतप तो ईश्वर दर्शन रूप ही है।

विश्ववंद्य महात्मा गांधी और गीता के प्रकाण्ड पंडित श्री बालगंगाधर तिलक के तपस्या विषयक खयालात बताकर पूज्य श्री ने कहा—श्री तिलक ने अपने जीवन में उपवासों को स्थान नहीं दिया था अतः इस विषय में अनुभव शून्य होने से हम उनकी बात को प्रमाण भूत नहीं मान सकते। किन्तु महात्मा गांधीजी ने अनेक प्रसङ्गों पर उपवास किये हैं और तत्सम्बन्धी अपने अनुभव जनता के समक्ष रखे हैं। अतः तपस्या के विषय में मतभेद को कोई स्थान नहीं है। सभी मजहबों ने इसे स्वीकार किया है। किन्तु भाइयो! याद रखना केवल शरीर को ही सुखाकर जर्जरित मत कर देना साथ में अपने विषय विकार व कषायों को भी जर्जरित करना। तपस्या के विषय में क्या ही मंजे हुए उनके विचार थे। पूज्य श्री स्वयं तपस्या करते थे। किसी बड़े शहर में पदार्पण करने के पूर्व भी पूज्य श्री तीन दिन का उपवास करते थे। बीकानेर में पधारने के पूर्व एक वक्त पूज्य श्री ने आनन्दराजजी के कटले में तीन दिन के उपवास का अन्तिम दिन बिताया था।

एक साधारण पाठशाला के पांचपच्चीस छात्रों को सम्भालना भी बड़ा कठिन है। और खासकर आजकल के स्वतंत्रता के वाता-

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:38 PM

वरण में यह बात और भी कठिन है। पूज्य श्री अपनी सम्प्रदाय के साधु साध्वियों को सम्भालने में क्या पीड़ा अनुभव करते थे उसे लिखने में आनन्द नहीं आता। एक दिन उनकी आंखों में इसी कारण से आंसू देख कर मेरा दिल बैठ गया। मैं तो समझता था कि पूज्य बनने में बड़ा आनन्द आता होगा। बड़े २ लोग आते हैं, दूर २ के सेठ दर्शनार्थ आते हैं और इतने लोगों पर अनुशासन करने का मौका मिलता है। मगर आंखों में आंसू देख कर यही खयाल आया कि यह तो कांटों का ताज है। सत्य के लिए पूज्य श्री प्रिय से प्रिय वस्तु को भी छोड़ सकते थे।

◎ कपासन ◎

—❖—

पूज्यश्री ने मारवाड़ छोड़ दिया था और मेवाड़ में कपासन चातुर्मास किया था। मैं भी बीकानेर छोड़कर सादड़ी गुरुकुल में तीन वर्ष तक अध्यापन कार्य करके बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी में पं० सुखलालजी के पास पढ़ने चला गया था। पढ़कर मेवाड़ आया। मेरे मित्र श्री रतनलालजी नलवाया छोटी सादड़ी वाले के साथ कपासन पूज्यश्री के दर्शनार्थ गया। रात्रि को जब पूज्यश्री की सेवामें पहुँचा तो सब से पहले यह प्रश्न किया कि कहो बनारस में क्या २ पढ़े और किससे ? मैंने कहा हिन्दु धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म का तुलनात्मक दृष्टि से थोड़ा अध्ययन किया है। इसके

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

उपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान्, हिन्दु धर्म के वेद, वेदान्त, उपनिषद्, पुराण, गीता, आदि शास्त्रों के वेत्ता डाक्टर भगवानदासजी के पास कुछ मास रह कर कुछ उपनिषद् भी पढ़े हैं। 'ईशावास्योपनिषद्' पढ़ा है ? मैंने कहा, जी हां। पहला श्लोक बोलो और अर्थ करो। परीक्षा के नाम से बड़े से बड़े व्यक्ति भी घबरा जाते हैं। मेरी रह कांप गई। दिल को मजबूत बनाकर अर्थ कह गया। 'ईशावास्यमिदं सर्वं' पद का फिर पूज्य श्री ने जैन-दृष्टि बिन्दु से अर्थ करके बताया और कहा कि अपनी विचार शक्ति को बढ़ाओ तथा समन्वय शक्ति प्राप्त करो।

पूज्य श्री जैन धर्म की वस्तुविवेचन प्रणालिका से परिचित थे। जैन आगमों का उन्हें ऊंचा ज्ञान था। शाब्दिक अर्थ तो वे जानते ही थे साथ में सूत्रों का व गणधरों की वाणी का रहस्य भी वे खूब जानते थे। इसके सिवा हिन्दु धर्म तथा बौद्ध धर्म के अध्ययन का उन्हें बड़ा शौक था। गीता का वे प्रतिदिन पाठ करते थे। व्याख्यान के पूर्व जब तक छोटे मुनि व्याख्यान देते तब तक पूज्य श्री को गीता पाठ करते मैंने देखा है। पूज्य श्री से पूछने से मालूम हुआ कि यह अधिकार हर एक को नहीं है। जिसने पहले अपने धर्म का गहरा अध्ययन कर लिया हो, श्रद्धा मजबूत हो गई हो वही इतर धर्मों का भी अध्ययन कर सकता है और इतर धर्मों के अध्ययन से अपनी बातों को अधिक पुष्ट कर सकता है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

जिसे अपने धर्म का पूरा ज्ञान न होगा वह संशयात्मा होकर विनष्ट हो जायगा। बिना विरोधी मान्यता के ज्ञान के अपने धर्म की भी सच्ची जानकारी नहीं हो सकती यह बात ठीक है मगर पात्रता का खयाल रखना आवश्यक है। सम्यग्दृष्टि असत् शास्त्रों को भी सम्यग् रूप में परिणत कर सकता है। पूर्ण श्रद्धावान् बनने के बाद किसी भी ग्रंथ का अध्ययन निषिद्ध नहीं है। आजकल के बहुत से साधु व श्रावक ग्रंथ प्रकाशन की सुविधा के कारण इधर उधर की बिना पूर्वापर सम्बन्ध जाने पोथियां पढ़ डालते हैं और अपने धर्म के सिद्धान्तों से चलित हो जाते हैं। अतः पहले स्वधर्म की अच्छी जानकारी करके पश्चात् इतर ग्रंथ पढ़े जाँय। पूज्यश्री के इन खयालातों का मेरे दिल पर गहरा असर पड़ा।

स्त्री शक्ति का चित्र-

समाज-भूषण श्री नथमलजी चोरड़िया व श्री अमृतलाल रायचंद झौहरी भी दर्शनार्थ आये हुए थे। व्याख्यान में पूज्यश्री ने नारी-शक्ति का वर्णन किया था। मैंने अन्य अनेक जैन सन्तों के व्याख्यान सुने हैं। नारी को इतना विकृतरूप में चित्रित किया जाता कि सुनकर घृणा होने लगती थी। किन्तु पूज्यश्री के द्वारा नारी जाति की प्रशंसा में व्याख्यान सुनकर दिल को आनन्द हुआ। पूज्यश्री ने फरमाया—ऋषभदेव, महावीर, रामचन्द्र, कृष्णचन्द्र जैसे

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

महापुरुषों को उत्पन्न करने का सौभाग्य नारी को ही है । इन्द्र मनुष्य जाति में तीर्थंकरों की जननी को ही प्रणाम करता है । मल्लिनाथ स्वयं स्त्री थे । मित्रों ! नारी खराब नहीं है । तुम्हारी दुर्भावनाएँ खराब हैं, जिन्हें छोड़ने का यत्न करो । रात्रि को श्री चोरड़ियाजी ने जैन समाज में विधवा-विवाह होने न होने के विषय में पूज्य श्री से प्रश्न किये थे । व्याख्यान में पूज्यश्री ने विधवा-विवाह का विरोध किया था । कोरा विरोध ही नहीं किया किन्तु साथमें उसके कुटुम्बियों का कर्तव्य भी बताया था । विधवा के माता पिता और सास ससुरे को ब्रह्मचर्य पालना चाहिए । घर में विलास की सामग्री को हटाकर सादगी पूर्ण वातावरण दाखिल करना चाहिए । विधवा को सफेद वेष पहनना चाहिए । उसे ईश्वर साक्षात्कार करने का एक सुन्दर अवसर हाथ आया है, ऐसा समझना चाहिये और तपस्या पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिये । मैं भी विधवा विवाह का समर्थक बना हुआ था । पूज्यश्री के विचार सुनकर इस विषय की और अधिक माहिती करके फिर अपने विचारों को स्थिर करने का नक्की किया ।

कपासन में एक और व्यक्ति दर्शनार्थ आया हुआ था । उस वक्त प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी म० सा० उदयपुर विराजते थे । उस व्यक्ति ने कोई बात पूज्यश्री से कही, जिसे सुनकर पूज्यश्री तमतमा उठे । पूज्यश्री ने फरमाया कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

कड़ी और इस आशय के शब्द भी नहीं कहे। असत्य को पूज्यश्री सहन नहीं कर सकते थे। किसी बात की थाह लेने की उनकी आदत थी। मैं उदैपुर जाने वाला था। मुझे इस बात की जाँच करने की आज्ञा हुई। जांच से यह पाया गया कि न इधर कुछ हुआ और न उधर। किन्तु भिड़न्त कराने में आनन्द मानने वाले उक्त महाशय की ही यह करतूत थी।

बम्बोरा (मेवाड़)

कानोड़ के करीब ५० श्रावक पूज्य श्री से कानोड़ पधारने की विनती करने को बम्बोरा गये थे। मैं भी कानोड़ वासी होने तथा वंशपरम्परा से पूज्य श्री का श्रावक होने से बम्बोरा गया था। हम लोग उस पहाड़ी प्रदेश में चक्कर काटते काटते रात्रि को बड़ी देर से पहुँच सके। बम्बोरा मेवाड़ प्रदेश में अनेक छोटे २ पर्वतों के बीच में बसा हुआ है। इसके पास एक छोटी नदी भी चक्कर खाती है। मीणों के इस जंगली प्रदेश में भी स्थानकवासी श्रावकों के एक सौ घर हैं। रेल तार आदि का साधन न होने पर भी श्री लोंकाशाह का मिशन कहाँ २ पहुंच गया।

संसार प्रसिद्ध और संसार में अद्वितीय सबसे बड़ा कृत्रिम झील जयसमुद्र यहां से दस माईल दूर है और मकानों पर चढ़ कर देखने से यह दिखाई देता है। हम लोग उसी समय दर्शनार्थ पहुंचे।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

'मत्थएण वंदामि' की अनेक लोगों की सामूहिक आवाज सुनकर पूज्य श्री ने पूछा कहाँ के श्रावक हैं? हम में से एक भाई बोले कानोड़ के। कौन २ हैं? अमुक, अमुक। ज्योंही मेरा नाम बोला गया त्योंही आगे नाम पूछना छोड़कर पूज्य श्री मुझपर कोपायमान होकर कहने लगे क्योंजी 'जैन प्रकाश' में तुमने लेखमाला शुरू की है और उसमें साधुओं के पीछे लठ्ठ लेकर पड़े हो। साधुओं को सुधारने के पहले अपना सुधार करलो।

इस प्रकार साधुओं के सम्बन्ध में लिखना ठीक नहीं है। पूज्य श्री का पुण्य प्रकोप देखकर मैं चुप था। मैं पूज्य श्री के स्वभाव से परिचित था। उनके क्षणिक क्रोध के अनेक उदाहरण पहले अन्य लोगों पर मैं देख चुका था। यहाँ तक कि जब तेरह पंथ सम्प्रदाय के श्रावक शंका समाधान के लिए आते थे तब भी उनपर कुतर्क करने पर या असत्य पक्ष लेने पर पूज्य श्री गरम हो जाते थे। उस वक्त मैं यह अनुभव करता था कि पूज्य श्री इतर सम्प्रदाय के लोगों के साथ यदि शान्ति पूर्वक ही पेश आते तो अच्छा। इसके लिए मैंने एकान्त में निवेदन करने का विचार भी किया था मगर फिर खयाल आया कि महापुरुष जो करते हैं वह ठीक ही है।

असत्यपक्ष या बात पर क्रोध नहीं आयगा तो असत्य व माया जाल को सहारा मिलेगा। मायाजाल व असत्य पर सत्य का कोप होना आवश्यक है। इसीमें आत्म [illegible] हित [illegible] है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

मैं जानता था कि पूज्य श्री का क्रोध अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानी वरणीय, या प्रत्याख्यानावरणीय, नहीं है किन्तु संज्वलन कोटि का है जो कि अभी एक ही क्षण में शान्त हो जायगा। और सचमुच एक क्षण बाद ही वह क्रोध पलायमान हो गया और पिता जैसे पुत्र को डांट डपटकर बाद में प्रेम से बातें करने लगता है वैसे ही शान्ति पूर्वक अन्य बातें करने लगे। भारत भाग्य विधाता, नवयुवकों के हृदय के हार राष्ट्रनेता पं० जवाहरलाल जी का भी ऐसा ही स्वभाव है। वे भी मायाजाल-असत्य-अव्यवस्था आदि सहन नहीं कर सकते और क्षणिक क्रोध कर बैठते हैं। मगर उनकी रग २ में देश प्रेम भरा है। इसी प्रकार हमारे चरित्र नायक भी क्षणिक आवेश में आ जाते थे मगर उनकी रग रग में धर्म प्रेम, समाजहित भरा हुआ था। स्वभाव में भी दोनों जवाहर समान हैं। कार्य में तो हैं ही। एक धर्मनेता दूसरे राष्ट्रनेता। इतना क्रोध भी यदि नष्ट हो जाय तो उनकी कर्तृत्व शक्ति भी नष्ट हो जाय और वे कृतकृत्य ही हो जायं। लोग अपने मेरु जितने दोषों पर भी दृष्टि नहीं डालते मगर राई जितने दूसरों के दोषों को बहुत बड़ा देखते हैं।

मेरे खयाल में पूज्यश्री का कुपित होना दोष नहीं था। हम जिस स्टेज पर हैं उस दृष्टि से ही विचार करना चाहिये। छट्ठे गुणस्थानवर्ती से त्रयोदश गुणस्थानवर्ती जैसी आशा रखना दुराशा है। पूज्य श्री मेरे लेखों की बातें भूल गये। दूसरे दिन दूसरा ही काण्ड उपस्थित हुआ

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

जिस में हम पूज्य श्री की महत्ता का दर्शन करके अपने को भाग्य शाली मानने लगे।

बम्बोरा के बाजार में साइबो के बने शामियाने के नीचे हजारों स्त्री पुरुष पूज्य श्री की ओर टकटकी लगाये व्याख्यानरूपी अमृत का पान कर रहे थे। पूज्य श्री पुद्गलों की स्थूलता व सूक्ष्मता का बयान कर रहे थे। सूच्यग्र भाग में आ जाय इतना पुद्गल यदि विस्तृतरूप धारण करे तो मेरु जितना भी हो सकता है। पुद्गलों में संकोच विस्तार गुण रहा हुआ है आदि। यह धाराप्रवाही व्याख्यान चल रहा था कि दो ओसवाल भाई जिन्हों ने बारह वर्ष पूर्व मारवाड़ में जा कर एक ढेली की लड़की को ओसवाल बताकर सगाई करने की कोशिश की थी और भण्डाफोड़ होने से बीकानेर जेल की छः मास तक हवा खा कर अपने किये का फल पाया था, अपने मस्तक पर जूतों का पोटला लेकर खड़े हो गये और अपना दर्द मिटाने की पूज्य श्री से प्रार्थना करने लगे। उन में से एक की स्त्री भी अपने बाल बच्चों को उठाकर खड़ी हो गई। यह करुणाजनक दृश्य पूज्य श्री से देखा न गया और उनकी आंखों में आंसू आ गये। अनेक श्रोताओं की आंखों में भी अश्रु आ गये। मेरी आंखें भी गीली हो गई। मेरी विचारधारा इस वक्त दूसरी तरफ चली गई। मैं रात्रि वाले पूज्य श्री के हृदय का, जब कि मुझ पर कुपित होकर मुझे डांट रहे थे, इस वक्त के पूज्य श्री के साथ तुलना करने लगा। दोनों का यह

shreemadjawaharachariy

Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

कैसः परस्पर विरोधी स्वभाव है। 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' सन्तों का अन्तःकरण वज्र से भी कठोर और कुसुम से भी कोमल होता है, यह संस्कृत साहित्य में पढ़ा था किन्तु इस का असली रहस्य आज दिमाग में आया। इस बात से ज्यों ही मेरा मन हटा कि क्या देखता हूं कि पूज्य श्री अपने आपको करुणा पूर्ण वातावरण से काबू में लाते हुए कहने लगे मेरे प्यारे ओसवाल भाइयो! आप का पेट बहुत बड़ा है। आपमें अनेक जातियाँ समाई हुई हैं। इन दो भाइयों को भी अपने उदार हृदय में स्थान दे दो। इन को अपनी करनी का फल जेलवास तथा बारह वर्ष तक आपलोगों से जुदा रहने से मिल चुका है। ये दोनों भाई ओसवाल ही रहेंगे। आप को छोड़ कर कहाँ जायं।

पूज्य श्री की अपील पर बम्बोरा के श्रावकों ने उन दोनों भाइयों को जाति में शरीक कर लिया। शरीक करने का काण्ड बहुत बड़ा है। मुझे तो पूज्य श्री के स्वभाव का असली रूप बताना है। जब बम्बोरा के पंच उक्त दोनों व्यक्तियों को लेने न लेने के सम्बन्ध में विचार करने इकट्ठे हुए तब उन में शरीक होने का मुझे भी अधिकार मिला था। मुझे पूज्य श्री ने एकान्त में बुलाकर कहा— देखो इन दोनों को जाति में शामिल करने के सम्बन्ध में यदि लोगों में मतभेद हो जाय और यदि किसी भी तरह से मामला तै न होता हो तो मतभेद को स्थान दे देना अर्थात् तड़ो-पाटी को सहन कर लेना मगर इन बेचारों का उद्धार हो जाना चाहिए। तड़ें

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

तो कालान्तर में मिल जायेंगी मगर ये जुदा रह गये तो कभी नहीं मिल सकेंगे और सदा के लिए अतिन्युत रह जायेंगे। अम्बोरा के वे दोनों भाई उस वक्त सर्वसम्मति से जाति में मिला लिये गये, पै किन्तु पूज्य श्री की इस बात ने मुझे चक्कर में डाल दिया कि जाति में दो पार्टियाँ हों तो होने देना मगर किसी एक पार्टी में इन दोनों को मिला लेना। पूज्य जवाहर जैसे जैन धर्म के मर्मज्ञ पञ्च-महाव्रतधारी आचार्य पार्टीबाजी को कैसे स्वीकृत करते हैं।

मुझे बिहार की राजधानी पटना में 'आल इण्डिया कांग्रेस कमिटी' की मीटिंग में पूज्य महात्मा गान्धी द्वारा दिया हुआ भाषण स्मृतिपथ में उतर आया। महात्माजी ने कहा था—'बन्धुओ! धारासभाओं का बायकाट करने का प्रस्ताव भी मैं लेकर उपस्थित हुआ था और अब धारासभाओं में जाने का प्रस्ताव भी मैं ही लेकर उपस्थित हुआ हूं। बात एक वक्त त्याज्य होती है परिस्थिति बदल जाने से वही ग्राह्य बन जाती है। आप लोग इस में परस्पर विरोधी भावना की कल्पना मत करो। उद्देश्य लक्ष्य की तरफ खयाल करो'। पूज्य श्री की इस आज्ञा में, विचार करने पर मुझे कल्याणभाव ही मालूम पड़ा। अहिंसा मुख्य वस्तु है। अहिंसा का दूसरा अर्थ है प्रेम। अगर प्रेम भाव का लोप होता हो तो फूट को अपनाना भी अच्छा है। मैं समझ गया, जिस एकता से किसी का अनिष्ट होता हो उस से तो अनेकता ही अच्छी है। पूज्य श्री की इस आज्ञा से

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:39 PM

मालूम होता है कि जैन धर्म का स्याद्वाद् सिद्धान्त वे पढ़े ही नहीं थे किन्तु उसका लोक व्यवहार में उपयोग भी करना जानते थे। वे दुनिया देख चुके थे ; मैं अनुभव हीन था।

हम लोग बम्बोरा में तीन दिन ठहरे थे। एक दिन पूज्य श्री मुझसे कहने लगे—जौ की रोटी खाकर इस पर्वत श्रेणि के बीच बसे हुए गांव में रहना मुझे बहुत अच्छा लगता है। यहाँ शहर जैसी धमाल नहीं है। दर्शनार्थियों की भीड़ भी नहीं रहेगी। जिसे खास आना होगा वही आयेगा। मुझे जौ की रोटी अनुकूल भी आ गई है। पानी भी यहाँ का अनुकूल है। हवा तो विशेष बलप्रद है। थोड़ी देर बाद कहा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ कि मैं यहाँ रह सकूं ! सम्प्रदाय का भार मेरे पर है वह मुझे नहीं रहने देता। शहरी लोग भी यहाँ रहने नहीं देंगे। मगर मेरा मन यहाँ प्रसन्न रहता है। पूज्य श्री के ये विचार सुन कर मुझे उन की जन्म भूमि 'थान्दला' याद आ गई। वह भी पर्वत प्रदेश के बीच बसा हुआ है और पास में नदी है। पूज्य श्री के बचपन के संस्कार जागृत हो उठे थे और शुद्ध शान्त वातावरण में रहने का मन हो गया था।

हम भावना प्रधान व्यक्तियों को नागरिक जीवन अच्छा लगता है किन्तु सन्तों को एकान्त शान्त खेड़े का जीवन पसन्द पड़ता है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कलकत्ता छोड़ कर बोलपुर स्टेशन से चार मील दूर घने वृक्षों के बीच रहना पसन्द

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

किया था और इसी प्रकार का भाव उन्होंने अपनी बनाई 'गीतांजली' में भी व्यक्त किया है—

'राजमार्ग से दूर किसी, एकान्त शान्त खेड़े के पास,
पावन पर्ण कुटि में चहता, मैं अपना स्वच्छन्द निवास।
काव्य और वेदान्त विषय के, चुने ग्रन्थ दो चार अनूप,
हों यदि मेरे निकट बनूं तो, मैं तो फिर भूपों का भूप॥

साबरमती के सन्त महात्मा गान्धी जी ने भी वर्धा के पास सेगांव (सेवाग्राम) पसन्द किया है। न मालूम दुनिया की दृष्टि में पागल बने इन सभी सन्तों का स्वभाव एक समान ही क्यों है। महावीर स्वामी ने भी साधना के लिए जंगल—ग्राम्य जीवन ही पसन्द किया था। पूज्य श्री का आकर्षण भी ग्राम जीवन की तरफ था इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं। सभी सन्तों के मानस की रचना समान गुणधारी परमाणुओं से ही होती है। लोक संग्रह के लिए—जनकल्याण के लिए अपनी निजी चाहना का खयाल न करके वे नगरों में विचरे हैं। मगर देखना यह है कि उनका मन किधर खिंचता था महात्माजी ने भी हिमालय में जाकर ध्यान मौन में जीवन बिताने की इच्छा प्रकट की थी किन्तु जन कल्याण के लिए आम जनता के साथ रहकर जीवन यापन करने में उन्हों ने अधिक श्रेय देखा था और इसी लिए वे हमारे साथ हैं। पूज्य श्री भी हमारे साथ रहे हैं। यह जमाना एकान्त साधना के अनुकूल बहुत कम

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

पड़ता है दूसरी बात साधारण जनता में कार्य करने से खरे खोटे की परीक्षा हो जाती है। क्रोधादि शान्त हुए हैं या नहीं इसकी परीक्षा आम जनता के संसर्ग में आने से ही हो सकती है।

न्याय पर-दृढ़ता

पूज्य श्री की शीतल छाया में तीन दिन बिता कर मैं अपने गांव आने वाला था कि एक भाई उदयपुर से यह खबर लेकर आया कि बम्बई में स्थानकवासी कॉन्फरन्स की जनरल मीटींग हुई थी और उस में पूज्य श्री के श्रावक अमुक प्रस्ताव के वोटिंग के समय मध्यस्थ रहे थे। उनके मध्यस्थ रहने से ही वह प्रस्ताव पास हो सका था यह समाचार सुन कर पूज्य श्री विचार सागर में डूब गये। मुझे बुलाकर कहने लगे—सत्य का समझना और उसका आचरण करना बड़ा कठिन है बहुत बार लोगों को अच्छा दिखाने के लिए भी सत्य का पक्ष छोड़ दिया जाता है। पितलियाजी जैसे समझदार श्रावक भी इस वक्त चक्कर में पड़ गये और जिस बात को वे दिल से ठीक नहीं समझते थे उसको उन्होंने मौन रह कर स्वीकार कर लिया। पितलियाजी बड़े उदार बन गये। मुझे भी उदार बनना आता है मगर जहाँ आत्मा गवाही न देती हो उस कार्य में मैं कैसे हाथ डालूं। पूज्य श्री के स्वभाव में एक प्रकार की अडोलता थी। वे बदनामी या नेकनामी का खयाल कम करते, मगर सत्य क्या है

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

और असत्य क्या है इसका खयाल अधिक करते । जहाँ सिद्धान्त की बात होती हो वहाँ वे पूर्णमनोयोग के साथ अड़े रहते थे । महात्मा गान्धीजी में भी हम यही बात देखते हैं ।

कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के सदस्य एक तरफ और गान्धी जी एक तरफ । कांग्रेस की नीति में अहिंसा को स्थान देना या न देना मुद्दा लेकर यह विवाद खड़ा हुआ था और गान्धीजी कांग्रेस से जुदा हो गये । आखिर सत्य की विजय हुई । यह सब जानते हैं । पूज्य श्री का यही मुद्दा था कि जिस बात को दिल से ठीक नहीं समझते उस को मौन रह कर क्यों स्वीकार किया ? विरोध क्यों नहीं किया ? अगर दिलसे ठीक समझते हो तो खुशी के साथ समर्थन करो मुझे इस में तनिक भी नहीं कहना है । आजकल एकता: एकता की मांग बहुत पुकारी जाती है मगर किसी सिद्धान्त का सवाल होता हो तो पहले सिद्धान्त का खयाल करो बाद में एकता का । एक सीता के लिए रामचन्द्र जैसे धर्मात्मा ने महायुद्ध किया था ।

कानोड़ (मेवाड़)

मैं पूज्य श्री की यह बात सुन कर रतलाम पहुंचा, और सेठ वर्धमानजी सा० से सब बात कही । उन्होंने भी कुछ कहा था वह कानोड़ में विराजमान पूज्य श्री को सुना दिया । एक दिन

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

बातचीत के दौरान में पूज्य श्री ने कहा—देखो—पूर्णचन्द्र! मुझे भी सत्तासी साधुओं का आचार्य बनना अच्छा लगता है मगर साधुता का स्टेण्डर्ड ऊंचा रखना मेरा कर्त्तव्य है। थोड़े साधु हों मगर अच्छे हों, क्रियापात्र व विद्वान् हों। भेड़ों की जमात से एक सिंह अधिक शक्तिशाली होता है। पूज्य श्री बहुमतवाद की अपेक्षा सत्ययुक्त एक तंत्र को पसन्द करते थे। वे आधुनिक प्रजातंत्र की अपेक्षा रामचन्द्र के एक तंत्र को अधिक चाहते थे। वे कहते थे कभी कभी बहुमतवाद अत्याचार कर बैठता है। जहाँ सत्य है वहाँ विजय है यह नीति उत्तम है।

कानौड़ में पूज्य श्री सात आठ दिन विराजे थे। उनका अन्तेवासी बनने—सदा पास में रहने का अवसर यहीं पर मुझे सब से अधिक मिला था। रात को, दिन को, दोपहर को सदा मैं पूज्य श्री की सेवा में रहा और उनका अन्तर्बाह्य जीवन देखने लगा। मुझे वे स्फटिक मणि के समान स्पष्ट स्वभाव वाले मालूम पड़े। घालमेल की नीति उन्हें छू तक न गई थी। जो बात हो वह साफ पूज्य श्री का मुझ पर विश्वास हो गया था। उन्होंने अपना हृदय खोलकर मेरे सामने रख दिया था। किस प्रकार उन्हें पूज्य पदवी के लिए तय्यार किया गया था और किन २ ने यह भार निभाने में साथ देने का वचन दिया था, साधुओं को निभाने में क्या २ कठिनाइयां अनुभव करनी पड़ती हैं आदि अनेक बातें टहलते हुए मुझे सुनाते थे। पूज्य श्री हुक्मीचन्द्र जी म० की दोनों सम्प्रदायों

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

का ठेठ से इतिहास सुनाया। निम्बाहेड़े में समझौता भङ्ग कैसे हुआ आदि अनेक बातें श्री मुख से मैंने सुनी और सिक्के की दोनों बाजू समझने का अवसर मिला।

परस्पर विरोधी मालूम पड़ने वाली एक और बात लिखकर कानोड़ के संस्मरण समाप्त करता हूं। कानोड़ में स्थानकवासी जैनों के १७५ घर हैं। तेरहपंथ सम्प्रदाय के २५ घर हैं। अमुक मुनिराज के चातुर्मास काल में किसी कारणवश स्थानकवासी-तेरह पंथियों में लगभग दो पार्टियाँ हो गईं। उक्त मुनि ने स्थानकवासियों को तेरह पंथियों के साथ लग्न व्यवहार न करने की भी प्रतिज्ञा दी थी। परस्पर औरतें पानी के मटके भी न छूती थीं। यदि किसी तेरहपंथी का बच्चा स्थानकवासियों की न्यात में आ जाता तो सब लोग जीमते जीमते उठ खड़े होते थे। यह परहेज स्थानकवासियों की ओरसे तेरहपंथियों को उनके कृत्य का फल चखाने के लिए किया जाता था।

जिस प्रकार मारवाड़ मालवे में मन्दिरमार्गियों की ओर से स्थानकवासियों को जलील करने का प्रयत्न होता है वैसा ही कानोड़ में स्थानकवासियों द्वारा तेरह पंथियों के लिए होता था। पूज्य श्री कानोड़ पधारे तब यह सब हकीकत शुरू से अन्त तक सुन कर इसका निकाल लाने का प्रयत्न किया। यह प्रयत्न शुरू किया। यह प्रयत्न जब हुआ था मैं कानोड़ न था, मैं बाहर पढ़ता था।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

पूज्य श्री ने अपने श्रावकों को समझाकर दोनों पार्टियों को एक कर दीं। इस प्रयत्न में सामने वाली पार्टी को कुछ नहीं कहना था। वे तो मिलने के लिए लालायित ही थे।

पूज्य श्री ने अपने प्रभाव से कानौड़ के श्रावकों को समझा दिया और एकता करादी। एकताएं तो पूज्यश्री ने अनेक कराई होंगी। किन्तु इस एकता में उनके हृदय की विशालता का सच्चा पता लगता है। इस बात की तह तक पहुंचकर यदि हम विचार करेंगे तो मालूम पड़ेगा कि पूज्य श्री सम्प्रदायवादी न थे किन्तु सत्यवादी थे। यह एक साधारण घटना मालूम पड़ती है मगर मेरी दृष्टि में बहुत महत्व पूर्ण है। मेवाड़ प्रदेश में पूज्य श्री तेरह पंथ संप्रदाय की मान्यता का नामोनिशान मिटा देने के लिए पूर्ण मनोयोग के साथ पीछे पड़े थे किन्तु कानौड़ में उनके प्रति दया भाव लाकर उनको स्थानकवासियों के साथ सामाजिक व्यवहार में मिला देते हैं। यह प्रत्यक्ष विरोध है। किन्तु नहीं। पूज्य श्री महापुरुष थे। वे यह समझते थे कि 'घृणा पाप से हो, पापी से नहीं कभी लवलेश' पाप से घृणा करना चाहिये, पापी से नहीं।

हमारा तेरहपंथ की दया दान सम्बन्धी मान्यता से विरोध है न कि तेरह पंथियों से। साधारण लोग पापी और पाप में भेद नहीं समझते। पापी तो दया पात्र होता है। उससे सदा प्रेम करना चाहिए। जहाँ मारवाड़ सादड़ी में श्वे० मूर्ति पूजक संप्रदाय के

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

आचार्य व सूरि अग्रगण्य भाग लेकर स्थानकवासियों का बायकाट कराते हैं वहाँ हमारे पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज अग्रगण्य भाग लेकर अपने श्रावकों में बदला लेने की भावना को दूर करके आपस में एकता से रहने की सलाहमात्र ही नहीं देते मगर भार-पूर्वक आपस में मिल जाने की प्रेरणा करते हैं यह हृदय की विशालता नहीं तो क्या है ।

मेरी नम्र बुद्धि के अनुसार पूज्य श्री सच्चे अहिंसक थे। तेरह पंथी अल्प संख्या में हैं और स्थानकवासी बहुसंख्या में। अपनी बहुलता का लाभ लेकर स्थानकवासी तेरह पंथियों को सतावें यह स्पष्ट हिंसा है और इस हिंसा का पूज्य श्री ने निराकरण किया। यह पूज्य श्री के हृदय की उदारता का फल है।

रतलाम.

श्री हितेच्छु श्रावक मंडल, रतलाम की मीटिंग में शरीक होने के लिए मुझे आमंत्रण मिला था। और पूज्य श्री के दर्शन किये भी बहुत समय हो गया था अतः मैं मंडल की मीटिंग में उपस्थित हुआ। उस वक्त मंडल की मीटिंग में खास चर्चनीय विषय यह था कि पूज्य श्री अब बहुत वृद्ध हो चुके हैं इस लिए किसी एक स्थान में स्थिरवास करना चाहिए। पूज्य श्री की इच्छा भी स्थिरवास

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

करने की थी। स्थिरवास केवल वास के लिए ही न था किन्तु साहित्योद्धार के कार्य की भी एक दृष्टि थी। बिना एक जगह निवास किए जैन आगमों पर टीका टिप्पणी लिखना, विशेष विवेचन करना व पाठ शुद्ध करने का कार्य संभव न था।

मेरे हृदय में बहुत दिनों से यह भावना थी कि पूज्य श्री के विशाल ज्ञान का हमारी समाज को स्थायी लाभ मिले। मेरे समान समाज के अनेक कर्णधारों की भी यह इच्छा थी किन्तु समाज के भाग्य में उनके द्वारा किया हुआ आगमोद्धार-कार्य बदा न था अतः यह खयाल खयाल मात्र ही रहा। क्या ही अच्छा होता यदि पूज्य श्री के आगम सम्बन्धी मनन पूर्ण ज्ञान का समाज लाभ ले सकी होती।

पूज्य श्री के लिए स्थिरवास करने की कई ओर से विनती थी। जलगांव के सेठ लल्लूभाईदासजी का खास आग्रह था कि पूज्य श्री जलगांव विराजें। सेठजी ने एक बहुत बड़ी रकम भी शास्त्रोद्धार कार्य में खर्च करने की अपनी भावना बताई थी। इधर बीकानेर की ओर का भी खास आग्रह था; बीकानेर विराजने से आस-पास के क्षेत्रों का भी ध्यान रखा जा सकता था। रतलाम वालों की भी अपने यहां स्थिरवास कराने की इच्छा थी। किन्तु इन सब विनतियों के उपरान्त एक विनती काठियावाड़ के श्रावकों की थी और उस पर खयाल रखना खास आवश्यक होगा तो पहले उधर हो आना और तत्पश्चात् स्थिरवास करना तय हुआ था।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:40 PM

उस समय सूत्रकृतांग सूत्र का अनुवाद कार्य चलता था। उसकी पांडुलिपि मुझे दिखाई गई थी। अनुवाद कार्य पं. अम्बिका-दत्तजी करते थे किन्तु इसका यह अर्थ नहीं था कि पूज्य श्री का कुछ हाथ न था। पूज्य श्री जो कुछ लिखा जाता था उसे ध्यान पूर्वक सुनते और कहीं जैन धर्म के विरोधी तत्व का पोषण तो नहीं हो रहा है इसका खास खयाल रखते थे। कहीं विशेष स्पष्टी-करण की आवश्यकता होती पूज्य श्री अपने भाव व्यक्त कर देते, जिन्हें पं०जी लिख लेते थे।

आजकल एक बवाल फैला हुआ है कि जैन समाज में अजैन पंडितों को नहीं रखना चाहिए। मैं व्यक्तिगत रूप से इस इस बात के खिलाफ हूं। यह धार्मिक अनुदारता है। गुण जहां कहीं हो, ग्रहण करने चाहिए। यदि हमारी समाज में वैसी योग्यता के पंडित हों तो पहले उनकी सेवा लेनी चाहिये। किन्तु यदि वैसे योग्य विद्वान् हमारी समाज में न हों तो किसी भी धर्म का अनुयायी क्यों न हो उससे अपने कार्य पूर्ति सहायता लेने में समाज को किसी प्रकार की हानि नहीं होती बल्कि लाभ ही होता है। पूज्य श्री के भी ऐसे ही खयालात थे। मैं उनकी भावना को समझता था। उनमें तुच्छ अनुदारता न थी। हमारी समाज के बड़े २ सन्त जो विद्वान लेखक व वक्ता गिने जाते हैं, अजैन पंडितों से पढ़े हैं। उनसे गुण ग्रहण करके ऋणी बनना हमें

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

शोभा नहीं देता। क्या जैन धर्म की यही उदारता है? गुण किसी से भी ग्रहण किया जा सकता है परन्तु आवश्यकता है सम्यग्ज्ञानी की अन्यथा गुणके साथ दोष भी गुप्त आते हैं। पं० अम्बिकादत्तजी परखे हुए विद्वान हैं।

रतलाम में दूसरा प्रश्न ध्यान खींचने योग्य यह था कि जहाँ पूज्य श्री स्थिरवास करें वहाँ दर्शनार्थियों के लिए पक्का मकान न बनाया जाय यह शक्य भी नहीं था। किन्तु भीनासर दर्शन करके आने वालों ने बताया कि सेठ चंपालालजी ने यह शक्य करके दिखा दिया। सेठ चम्पालालजी जैसों के लिए यह शक्य हो सकता है मगर इससे अनुचित होड़ बढ़ने का डर रहता है, यही एक विचारणीय बात है। कुछ ऐसा भी स्मरण होता है कि शायद रतलाम में मंडल की बैठक में यह बात तै हुई हो कि जहाँ पूज्य श्री स्थिर रहें केवल मकान व लकड़ी दर्शन शासन का ही इन्तजाम किया जाय।

इस सम्बन्ध में पूज्य श्री का दिया हुआ भाषण मेरी स्मृति में है। पूज्य श्री ने कहा था, भाइयो! साधुओं के दर्शन करने के लिए बाहर गाँवों या शहरों से जो श्रावक आते हैं वे तुम्हारे भाई हैं या जमाई? अनेक प्रकार के मिठाइयाँ जमाइयों के लिए बनाई जाती हैं। भाइयों के लिए विशेष तय्यारी की जरूरत नहीं होती। घर में जो हम खायें वही उन्हें खिलाया जाता है। दूसरी बात चरपरी चटनियां व मिठाइयां खाकर आप लोगों ने अपना स्वास्थ्य बिगाड़ डाला है। सादा भोजन किए बिना ब्रह्मचर्य की रक्षा भी दुर्लभ है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

सादे भोजन में जो आनन्द है उसका अनुभव करके देखो रूखी बिना चुपड़ी रोटी खूब चबा चबा कर खाओगे तब तुम्हें उसका स्वाद मालूम पड़ेगा। मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि चबा चबा कर स्वाद बना देने पर रूखी रोटी में भी बड़ा स्वाद है और वह स्वस्थता बढ़ाती है। भोजन के विषय में पूज्य श्री के खास विचार थे और समय समय पर उन्होंने अपने भाषणों में व्यक्त किए हैं। पूज्य श्री स्वयं सादा भोजन करते थे। जहाँ योग लगता वहाँ निर्दोष फलाहार पर व दूध दही छाछ पर ही रहते थे। एक बक्त पूज्य श्री ने बनाया था कि मसालेदार हरी शाकें छाछ में डाल कर धो ली जाती हैं और बाद में मैं उनको उपयोग में लाता हूं। ब्रह्मचर्य के लिए खानपान पर खास ध्यान देना आवश्यक है। मसालेदार व मीठी चीजें शरीर में पहुंच कर अपना दुष्कर्म अवश्य दिखलायेंगी। अतः धर्मिष्ठ-जनों को इस ओर ध्यान देना ही चाहिए। पूज्य महात्मा गान्धी जी ने भी पूज्य श्री के समान स्वाद जीतने पर विशेष ध्यान दिया है। पूज्य श्री यह भी कहते थे कि अगर शुभ श्रावक लोग सादा भोजन करेंगे तभी मुनियों को भी सादा भोजन मिल सकता है। मुनिधर्म निभाने में श्रावकों का बड़ा सहारा रहता है। शास्त्रों में श्रावकों को 'श्रमणोपासक' तक कहा है।

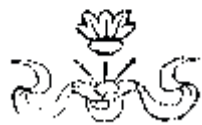

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

अहमदाबाद

मैं अनेक स्थानों में घूम फिर कर फिर सेठ भैरोंदानजी सा. की सेवा में चला गया था। कष्ट में मेरे वे ही सहारा हैं। उनकी मुझपर विशेष कृपा है उन्होंने मुझे साहित्य संपादन कार्य सीखने के लिये भारत भूषण शतावधानी पं. रत्न श्री रत्नचंद्रजी स्वामी की सेवा में अजमेर के चातुर्मास में भेजा था। नौ मास तक मैं शतावधानी जी की सेवा में रहा और 'सृष्टिवाद अने ईश्वर' नामक ग्रंथ की रचना में उनकी आज्ञानुसार कार्य किया था। शतावधानीजी केवल ग्रंथ सम्पादित ही नहीं थे किन्तु समाज की एकता के लिये सदा चिन्तित भी रहते थे। उन्हें साधु सम्मेलन को पुनरुज्जीवित करने की धुन थी। मेरे द्वारा उन्होंने बड़ा लम्बा पत्र व्यवहार साधु समिति की बैठक बुलाने के सम्बन्ध में करवाया था। शतावधानीजी हमारी समाज के वास्तविक रत्न थे। मुझे कई मुनियों की सेवा में उनके ख्यालात जानने और समिति में उनकी उपस्थिति की प्रार्थना करने भेजा था। इस प्रसंग में मुझे अहमदाबाद में विराजमान पूज्य श्री के पुनः दर्शन हुए। शतावधानीजी के विचार पूज्य श्री को कह सुनाये यह प्रकरण बहुत लम्बा है। पूज्य श्री भी साधु सम्मेलन की मीटिंग बुलाने के पक्ष में थे। मुझे पूज्य श्री का अन्तरंग बताना है। ऊपर की अनेक बातों से विशेष प्रयोजन नहीं है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

उस वक्त पूज्य श्री का स्वास्थ्य गिरा हुआ था। व्याख्यान कमी देते कभी न देते। मैंने व्याख्यान सुनने की इच्छा प्रदर्शित की। अन्य लोगों का भी आग्रह था। तपस्वी केसरीमलजी के उपवास चल रहे थे। पूज्य श्री व्याख्यान देने आये। जैन समाज पर एक बहुत बड़ा आक्षेप भारत के अनेक राष्ट्रमान्य विद्वानों द्वारा किया जाता है। लाला लाजपतराय जैसे देशभक्त राष्ट्र जैनी ने भी यह आक्षेप किया था कि जैनों की अहिंसाने भारत को कायर बना दिया है। इस आक्षेप का निवारण पूज्य श्री ने उस दिन के भाषण में इस प्रकार किया था। 'बन्धुओं जैन धर्म कायरों का धर्म नहीं है। यह वीरों का धर्म है'। क्षत्रियों ने ही इस को पाला पोषा है। क्षत्रिय कौम वीरता में प्रसिद्ध है। हमारे सभी तीर्थंकर क्षत्रिय हुए हैं। जैन धर्म जब से क्षत्रियों की संरक्षकता से निकल गया है, तब से उसका ह्रास होता गया है। मैं आप लोगों को शास्त्रीय दृष्टान्त सुनाता हूँ जिससे मालूम हो जायगा कि जैन धर्म कायरों का धर्म है या वीरों का। महावीर के जमाने में कोणिक और चेटक महाराजा बड़े प्रतापी नरेश थे। हल्ल और विहल्ल को हार और हाथी अपने हिस्से में मिले थे किन्तु कोणिक ने उनसे दोनों वस्तु ले लेनी चाही थी हल्ल-विहल्ल दोनों भाई चेड़ा महाराज की शरण में गये। चेड़ा महाराजा ने शरणागतों को जीवन की बाजी लगाकर भी शरण देना अपना कर्तव्य समझा था। कोणिक व चेड़ा

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

महाराजों का बड़ा भारी युद्ध हुआ था। चेड़ा महाराज ने अपने अधीनस्थ वीरों को युद्ध में भाग लेने का आमंत्रण दिया था।

वरुण नाग नटुआ नामक एक वीर जिसको दो दिन का उपवास था पारणा किए बिना ही अपने स्वामी की आज्ञा पाते ही युद्ध क्षेत्र में चला गया। युद्ध में उक्त वीर ने पीठ नहीं दिखाई मगर छाती दिखाई थी। अपना कर्तव्य पालन करते हुए मर्मस्थान में चोट आने से आलोयनानिन्दवना करके वह वीर स्वर्गगामी बना, चेड़ा महाराजा तथा वह वरुण नाग नटुआ क्षत्रिय थे और जैन धर्म के अनुयायी थे। यदि जैन धर्म कायरता सीखाता होता तो ये वीर युद्ध न करते। समता रख लेते। व्हेल-विहल को समझा देते। किन्तु एक सबल राजा अपने निर्बल भाई पर अत्याचार करे और उनका शरणदाता सहन करले यह ठीक न था। जैन धर्म अन्याय सहन करना नहीं सिखाता। जैन धर्म सदा न्याय का पक्ष लेता है और न्याय की रक्षा के लिए श्रावक वीरता पूर्वक युद्ध भी कर सकता है। जैनी यों तो निरपराध चींटी को भी नहीं सता सकता मगर अपराधी मनुष्य को मार भी सकता है। इस में उसका व्रत भङ्ग नहीं होता। हिंसा करने का उसको पाप तो अवश्य लगेगा मगर इस हिंसा से उसका जैनत्व नहीं मिट सकता। साधु की अहिंसा में और श्रावक की अहिंसा में बड़ा अन्तर है। साधु की अहिंसा सम्पूर्ण बीस बिस्वा है किन्तु श्रावक की नहीं। जैन साधु अपराधी या निरपराधी किसी भी प्राणि को किसी प्रकार की हिंसा

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

नहीं पहुँचा सकता। मगर जैन श्रावक अपना राज्य चलाने के लिए, गृहस्थी का पालन करने के लिए आरम्भिक हिंसा करता है। अपराधियों को दण्ड देता है। इस प्रकार की हिंसा से उस का पंचम गुणस्थान चला नहीं जाता सुरक्षित रहता है।

जैन लोग चींटी की रक्षा करते हैं और हाथी को निगल जाते हैं, यह आक्षेप सच्चे जैनियों पर लागु नहीं हो सकता। जैन का ऐसा आचरण नहीं हो सकता।

जैन धर्म की अहिंसा का इतनी विशालता पूर्वक अर्थ करके पूज्य श्री ने एक बहुत बड़ी गलतफहमी का अनेक बार खंडन किया था। पूज्य श्री ने यह भी कहा कि एक राजा से लेकर रंक तक जैन धर्म का अनुयायी बन सकता है। जैन धर्म त्याग सीखाता है और त्याग का अभ्यास कोई भी कर सकता है।

मैं पहले लिख चुका हूं कि उस समय पूज्यश्री का स्वास्थ्य ठीक न था। फिर भी पूज्य श्री को नवीन जानकारी करने का कितना शौक था कि वे छोटे मुनियों के न्याय के पाठ के समय स्वयं उपस्थित रहते थे। उस दिन के पाठ में मैं भी शरीक था।

पूज्यश्री न्याय शास्त्र के विद्वान न थे। इस कारण न्याय की प्रथम पुस्तिका प्रमाणनय तत्व लोकालंकार' के पाठ में श्रवणार्थ बैठते थे पूज्य श्री न्याय शास्त्र न पढ़े थे इससे उनकी विद्वत्ता में कुछ भी खामी मालूम नहीं पड़ती। न्याय के कई ग्रंथ पढ़े हुए हम जैसों को पूज्य

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

श्री धर्म का सच्चा रहस्य समझा सकते थे। हम न्याय पढ़कर भी धर्म का वास्तविक स्वरूप न समझ सके और पूज्य श्री न्याय पढ़े बिना भी धर्म को समझ सके और जीवन में उतार सके।

एक सज्जन पूज्य श्री की अशुद्ध हिन्दी की तरफ नफरत की निगाह करके मुझ से कहने लगे, देखो इतने बड़े आचार्य को शुद्ध बोलना भी नहीं आता। उस समय जब मेरा पूरा विकास नहीं हो चुका था भाषा की सुन्दरता की तरफ ही ध्यान रहता था। किन्तु अब उक्त सज्जन की बात मुझे बड़ी फीकी मालूम पड़ती है। भाषा भाव व्यक्त करने का साधन है। मुख्य वस्तु भाव है भाषा नहीं। पूज्य श्री के भाव कितने सुन्दर हैं, इस बात को व्याकरण की अशुद्धता का खयाल करके भूला देना आत्मा के प्रति अन्याय करना है। मेरे खयाल से सन्तों की वाणी खीचड़ी जैसी ही होनी चाहिए। श्रोता भी तो अनेक प्रकार के होते हैं। स्वयं महावीर ने लोक भाषा में उपदेश किया था। विद्वन्मान्य संस्कृत में उपदेश नहीं किया था। अनेक प्रान्तों में विचरने से भी भाषा बिगड़ सकती है।

पालनपुर

अजमेर के चातुर्मास में श्री शतावधानी जी की सेवा में रहने से उनका मेरे प्रति कृपा भाव बढ़ गया था। श्री शतावधानी जी महाराज अजमेर से विहार करके बीकानेर की तरफ पधारे थे। किन्तु मेड़ता सिटी में घाटकोपर का डेप्युटेशन विनत्यर्थ आगया।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

शतावधानी जी ने दानवीर सेठिया भैरोंदानजी सा० की सम्मति लेकर बम्बई के लिए विहार कर दिया । घाटकोपर में साधुमार्गी की मीटींग होने वाली थी और उसी के लिए शतावधानी जी म० बीकानेर जाने का कार्यक्रम स्थगित करके अपनी वृद्धावस्था व ब्लडप्रेशर की बीमारी का खयाल न करते हुए धर्म की धगश के कारण मेड़ता से घाटकोपर के लिए प्रस्थान कर गये । मेड़ता से विदाई देने के अवसर पर मैं उपस्थित था । उनको उस हिम्मत पर मेरी आंखों में आंसू आ गये थे । फरमाया कि कहाँ मारवाड़ का मेड़ता और कहाँ घाटकोपर (बम्बई) । पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की व मेरी मुलाकात होगी तब तुमको बुलायेंगे । श्री शतावधानीजी म. के पालनपुर पहुँचने के पूर्व ही मैं पहुँच गया था । पूज्य श्री के दर्शन किये और सब हालत उनके समक्ष रखें । जिसदिन शतावधानीजी म. पधारने वाले थे उसदिन पूज्य श्री के शिष्यों को सामने जाना चाहिये यह बात पूज्य श्री महसूस करते थे । मगर अपनी सम्प्रदाय के बंधारण के कारण वे उनकी अगवानी में अपने शिष्यों को भेजने के लिए मजबूर थे । पूज्य श्री श्रीलालजी म. सा. के समय से ही नहीं इनके पूर्वाचार्यों से बहुतसी साम्प्रदायिक मर्यादाएँ निश्चित की हुई हैं । उन मर्यादाओं का पूज्य श्री पालन करते थे । ज्योंही शतावधानी जी म. पालनपुर के विश्राम स्थल में पहुंचे कि दरवाजे तक मुनि श्री सीरेमलजी म० आदि गये और उनकी सुखसाता पूछकर उनके ठहरने आदि का स्थान बता दिया था । शतावधानीजी

shreemadjawaharachariy

Thursday, October 31, 2019 12:09:41 PM

म. पूज्य श्री की सेवा में पहुँचे। उस वक्त साधारण बात चीत हुई पालनपुर में दस दिन तक स्थानकवासी समाज के दोनों दिग्गज विद्वान श्री शतावधानीजी म. और पूज्यश्री जवाहिरलालजी म. साथ रहे। मैं पूज्य श्री व शतावधानीजी दोनों का प्रियपात्र था। दोनों की मुझपर विश्वास भरी दृष्टि थी। दोनों का पारस्परिक व्यवहार बड़ा मीठा रहा। मुझे श्रीशतावधानीजी ने कहा था कि पूज्य श्री जवाहरलालजी का जितना लूखा व्यवहार सुनने में आता है हमारे साथ उतना ही मीठा व प्रेम मय व्यवहार रहा है। पूज्य श्री के सिरेमलजी आदि अन्य सन्तों का प्रेम भी अपूर्व रहा।

एक दिन पूज्य श्री जहाँ शतावधानीजी म. की बैठक थी वहाँ प्रतिक्रमण के पश्चात् पधारे। दोनों का परस्पर वार्तालाप हुआ। मैं भी उपस्थित था। पहले घाटकोपर साधु समिति के विषय में बात हुई। फिर अन्य बातें। पूज्य श्री ने कहा-एक सुधर्म गच्छ कायम किया जाय, एक प्रकार की समाचारी बनाई जाय। श्रद्धा व प्ररुपणा का रुप भी निश्चित कर लिया जाय। उस सुधर्म गच्छ में मैं अपना सबसे पहले नाम लिखाता हूं। यदि मेरी सम्प्रदाय के साधु उक्त गच्छ में शरीक होना ना पसन्द करेंगे तो मेरी आज्ञा जितने सन्तों को स्वीकृत होगी उनको साथ लेकर मैं शामिल हो जाऊंगा। शतावधानीजी! आप चाहें कि स्थानकवासी सम्प्रदाय के सभी साधु एक मत होकर एक साथ उक्त गच्छ में अपना नाम

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

लिखा दें यह संभव नहीं है। मैं आपको प्रेक्टिकल स्कीम बता रहा हूं। हम लोग समाचारी बनायें। सब के पास भेजें। हम दोनों पहले सुधर्म गच्छ में अपना नाम दर्ज कर लें। फिर उस समाचारी को देखकर जिन २ साधुओं को व्यक्तिगत रूप से या समूह रूप से उसमें शामिल होना होगा वे होते रहेंगे। यदि हमारा प्रयत्न व निष्ठा शुभ होंगे तो अवश्य अन्य संप्रदायें व मुनि हमारी स्कीम में योग देंगे। वर्तमान साधु समिति के द्वारा आपको सफलता मिल जाय इस में संदेह है।

घाटकोपर में साधु समिति की बैठक हुई थी जिसका परिणाम हम सभी देख चुके हैं। यदि पूज्य श्री की सुधर्म गच्छ की योजना अमल में लाई जाती और उसमें पूज्य श्री व शतावधानीजी शरीक हुए होते तो स्थानकवासी समाज का भला होता। उनका मार्ग प्रदर्शन समाज के होनहार साधुओं के लिए बड़ा उपयोगी होता।

श्री शतावधानीजी को इस बात का संदेह था कि यह स्कीम पार पहुँचे या न पहुँचे। संभव है यह एक और जुदा सम्प्रदाय बन जाय और बत्तीस से तेंतीस संप्रदायें हो जायं। दूसरी बात उन्होंने मुझसे यह भी कही थी कि यदि पूज्य श्री के सभी साधु सुधर्म गच्छ में शामिल नहीं हुए तो पूज्य हुक्मीचंद्रजी म. की सम्प्रदाय तो कायम रह जायगी।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

मुझे पूज्य श्री की स्कीम पसन्द थी। पूज्य श्री ने जो कहा उस पर भी मुझे पूर्ण विश्वास था। एक नया गच्छ कायम करने की पूज्य श्री की इच्छा थी। जब पूज्यश्री कानौड़ में थे तब बात-चीत के दौरान में मुझसे कहा था कि क्यों न एक नया मार्ग निकाला जाय। किसी बिल्डिंग के जब अनेक अंग शिथिल हो चुके हों तब टेके लगा लगा कर कब तक कार्य निकाला जायगा। नया भवन निर्माण क्यों न किया जाय। पूज्यश्री ने जैन आगमों की वाणि का गहरा अध्ययन किया था। वे उस वाणि में प्रतिपादित तत्वों को समयानुकूल रूप देना चाहते थे। उस समय मेरी इतनी ऊंडी समझ नहीं थी। मैं पूज्य श्री के इस महान् आशय को समझ न सका था। पूज्य श्री जैन धर्म को नवीन रूप देना चाहते थे। हम लोगों ने जैन धर्म को बहुत संकुचित रूप में समझ रखा है। पूज्य श्री महान् सुधारक थे। अहिंसा के पूर्ण उपासक व मर्मज्ञ थे। मेरे खयाल से वह शेर गीदड़ों के सहवास में रहने के कारण अपने जन्म जात गुणों को भूल गया था। पूज्य श्री के नवीन मार्ग सम्बन्धी खयालात मैं जानता था अतः मुझे उनके वचनों पर आस्था थी।

जो लोग अनुभवी हैं वे जानते हैं कि कभी टेके लगाकर भवन टिकाया जाता है और कभी पूर्व भवन गिरा कर नींव से नया बनाया जाता है। पूज्य श्री का विश्वास था कि नींव से नया भवन बनाने से ही अधिक लाभ होगा। कोई युगावतारी पुरुष जन्म

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

लेगा और वही इस समाज का उद्धार करेगा। पुनः किसी लोंकाशाह जैसे व्यक्ति की आवश्यकता मालूम पड़ती है।

पालनपुर में दो तीन दिन पूज्य श्री ने व्याख्यान देने की कोशिश की थी मगर बोल न सके थे। व्याख्यान में शतावधानीजी व पूज्य श्री साथ बैठते थे। शतावधानीजी म० व मुनि सिरेमलजी म० व्याख्यान देते थे।

पालनपुर के दस दिनों में मैंने संत संगति का पूरा लाभ लिया था। मेरा मनोबल बहुत कमजोर है। मैं बहुत अच्छा सोच सकता हूं, कह सकता हूं और लिख भी सकता हूं मगर आचरण में नहीं ला सकता। एक कुटेव को मिटाने के लिए सहस्रों बार प्रयत्न किये मगर सफलता नहीं मिली। जिस बात को अच्छी समझता हूं उसका अमल बड़ा कठिन मालूम पड़ता है। अपनी यह कठिनाई मैंने पूज्य श्री के समक्ष रक्खी। पूज्य श्री ने मुझे समझाया, देखो मनोबल मजबूत करने की कोशिश करो। बड़ी बड़ी प्रतिज्ञाएं मत लो मगर छोटी सी प्रतिज्ञा ग्रहण करो और उसे जान से निभाने की कोशिश करो। इससे मनोबल की वृद्धि होगी। मनोबल की वृद्धि से इच्छाशक्ति बढ़ेगी इच्छाशक्ति-विल पावर-(Will-Power) के बढ़ने से अपनी आदतों को दूर करने के लिए पूरी मदद मिलेगी। तीव्र इच्छाशक्ति वाले की कुटेवें इस प्रकार नष्ट हो जाती हैं जिस प्रकार सूर्योदय होने से अन्धकार। कर्म क्या है? पूर्वोपार्जित

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

संस्कार ! संस्कार ही टेव है । अच्छा संस्कार अच्छी टेव, बुरा संस्कार कुटेव । आदतों का नाश करना ही कर्म-नाश है । श्रद्धा की कमी के कारण मनुष्य जानकारी के विरुद्ध आचरण करता है । अतः जिस आचरण को अच्छा समझते हो उसके प्रति तुम्हारी श्रद्धा होनी चाहिए । पूज्य श्री के इस विवेचन से मुझे बड़ी सहायता मिली है ।

पं० अम्बिकादत्तजी उस समय पूज्य श्री की सेवा में थे । उनसे मैंने मन, बुद्धि चित्त व अहङ्कार का स्वरूप समझा था । उनकी विद्वत्ता प्रशंसनीय है । मुनि श्री सिरेमलजी की सेवा में बैठ कर रात की दो भी बजाई थी ।

राजकोट के श्री चुनीलाल नागजी बोरा तथा राय साहिब श्री ठाकरसी मकनजी धीया आदि दर्शनार्थ आये हुए थे । पूज्य श्री के काठियावाड़ पदार्पण की यादगार में श्री महावीर जयन्ती के दिन पूज्य श्री की हाजरी में राजकोट में एक गुरुकुल संस्था की स्थापना हो चुकी थी । उक्त संस्था के लिए एक सुयोग्य पंडित की आवश्यकता थी । संस्था के संचालक व मंत्री चु. ना. बोरा सा. व श्री ठा+म. धीया सा. ने पूज्य श्री से योग्य व्यक्ति के लिए पूछा और कहा कि यदि योग्य व्यक्ति नहीं मिलेगा तो संस्था बन्द हो जायगी । मैं वहां उपस्थित था । मेरे लिए पूज्य श्री व शतावधानी ने शिक्षा-

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

रिश की। सेठियाजी सा. से तीन वर्ष के लिए मेरी मांगणी की गई थी जिसे सेठियाजी ने उदारता पूर्वक मंजूर किया था।

राजकोट गुरुकुल में मेरी नियुक्ति की संभावना देखकर पूज्य श्री ने व्याख्यान के पश्चात् हॉल में टहलते हुए दो दिन तक घंटा घंटा भर मुझे गुरुकुल प्रणाली के विषय में समझाया था। छात्र श्रद्धावान् व आचरणशील बने इस बात का खास ध्यान रखना। ज्ञान तो उन्हें मिलेगा मगर दृढ़ श्रद्धा व आचरण अधिक पुष्ट हों वैसा प्रयत्न करना। अध्ययन की पुरातन प्रणालिका बताकर मुझे भूरि भूरि भलामन दी थी।

पूज्य श्री का टहलना मुझे बहुत अच्छा लगता था। उनकी यह आदत थी। जब समय होता, टहलने लगते। जहां २ मैंने पूज्य श्री के दर्शन किए हैं उनको टहलते हुए देखा था। टहलने को संस्कृत साहित्य में चंक्रमण कहते हैं। बनारस हिन्दु युनिवर्सीटी में मैं पं. सुखलालजी से 'बुद्धचर्या' पढ़ता था। उसमें जगह २ भगवान् बुद्ध का चंक्रमण का जिक्र पढ़कर पूज्य श्री का चंक्रमण याद आ जाता था। मेरे दिमाग में आया, शायद महापुरुष चंक्रमण अधिक करते हों। गांधीजी भी तो चंक्रमण प्रिय हैं।

पालनपुर में किए हुए दर्शन मेरे लिए अन्तिम दर्शन हैं। इन्दौर से बीकानेर जाकर दर्शन करने के कई बार मनसूबे बांधे थे

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

मगर मनुष्य के सभी मनसूबे पूरे नहीं हुआ करते। पालनपुर में देखा हुआ उनका वह भव्य चेहरा, लम्बा, गौर वर्ण युक्त आकार, मेरी आंखों के सामने आता रहता है। उस आकृति को उसी रूप में अब कभी नहीं देख सकूंगा यह जब कल्पना करता हूं तब दिल को एक गहरी चोट पहुंचती है। मेरा दिल मानता ही नहीं है कि पूज्य श्री का वह भौतिक कलेवर अग्नि को शरण हो चुका है। मुझे ऐसा लगता है मानों भीनासर में पूज्य श्री अपनी शिष्य मंडली के साथ विराजमान हैं। वह शरीर चला गया मगर उसका मेरे मनरूपी कैमरे में जो फोटो खींचा हुआ है वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। मेरे शरीर की राख के साथ वह फोटो भी नष्ट होगा इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

बिखरे मोती

कुछ बातें जो मैंने पूज्य श्री से सुनी हुई हैं मगर किस स्थल पर और कब सुनी यह स्मरण में नहीं है। इनका नाम बिखरे मोती रखता हूं। किसी कुशल मालाकार से इन मोतियों का हार बना लिया जाय तो अच्छा है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

१ चर्चा का शौक–

पूज्य श्री को स्वसिद्धान्त की स्थापना करने का बड़ा शौक था। स्वसिद्धान्त की स्थापना के लिए पर सिद्धान्त की जानकारी आवश्यक है। वक्त पर दूसरों की गलत धारणाओं का खण्डन भी करना पड़ता है। पूज्य श्री निर्भीक होकर स्थानकवासियों की मान्यता का समर्थन करते थे। तेरह पन्थियों के 'दयादान' विषयक चर्चा के मर्मज्ञ भारतवर्ष भर में पूज्य श्री से कट कर अन्य कोई व्यक्ति नहीं है। पूज्य श्री ने इनकी मान्यता का ऊंडा अध्ययन, मनन किया था और निराकरण भी। 'अनुकंपा विचार और सद्धर्म-मंडन' प्रसिद्ध ही हैं। बीकानेर में श्वे० आचार्य कृपाचन्द्र सूरि के साथ शास्त्रार्थ के लिए लम्बी पेम्फलेट बाजी चली थी। उत्तर देने में पूज्य श्री पीछे न हटते थे। इस बात का उनको खयाल रहता था कि स्थानकवासियों की हेठी (कमजोरी) न दिखाई दे।

२ मनुष्य शक्ति का दुरुपयोग देख कर दुखी होना–

पूज्य श्री को इस बात का बड़ा खेद रहता था कि लोग अपनी शक्ति का धर्म कार्य में उपयोग क्यों नहीं करते? व्यर्थ बैठे बैठे इधर उधर के गप्पें लगाना, एक दूसरे की निन्दा करना और हा हू में समय नष्ट करना जीवन को बर्बाद करना है। बीकानेर में बड़ी २ हवेलियों के बाहर बड़े २ पाट पड़े रहते हैं। उन पर अनेक लोग बैठ कर इधर उधर की हांकते या ताश खेलते हैं।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

यह देख पूज्य श्री ने व्याख्यान में इस बात का जिक्र करके दुःख प्रकट किया था।

३ व्याख्यान में शान्ति रखनी चाहिए.

हमारे स्थानकों की शान्ति की यदि गिरजाघरों की शान्ति के साथ तुलना करेंगे तो बड़ा खेद होगा। कहाँ उनकी निस्तब्धता और कहाँ हमारा कोलाहल। व्याख्यान में पूज्य श्री को कई बार बाइयों के हल्ले पर व्याख्यान दे डालना पड़ता था। व्याख्यान में आवाज करने से वक्ता को जोर से बोलना पड़ता है। जिस व्यक्ति से उपदेश सुनने आते हो उस पर दया करनी चाहिए। बाइयों के हल्ले पर एक बार पूज्य श्री का पुण्य प्रकोप भी देखा गया था। पूज्य गांधीजी को भी सभा में अशान्ति पसन्द नहीं है।

४ साधुता की शान.

एकबार पूज्य श्री कानोड़ पधारे। अपने एहलकारों से पूज्य श्री के आने की बात सुनकर रावतजी ने व्याख्यान सुनने की इच्छा बताई। उस इच्छा में यह बात छिपी हुई थी कि पूज्य श्री राजमहल में या बगीचे में पधारकर उपदेश सुनायें। पूज्य श्री ने संदेश लाने वाले भाई को स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि हम इधर उधर जाकर उपदेश नहीं सुनाया करते। श्री रावतजी सा. यह बात सुनकर मन में बड़े खुश हुए कि यह कोई फक्कड़ साधु होना चाहिए।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:42 PM

इनका व्याख्यान अवश्य श्रवण करना चाहिए। सपरिषद् रावतजी सा. आम बाजार में जहां पूज्य श्री व्याख्यान दे रहे थे आये और श्रवणार्थ बैठ गये। तीन दिन तक बराबर व्याख्यान का लाभ लिया था। मेवाड़ के ठिकानों में कानोड़ के श्री केसरीसिंहजी रावतजी बड़े समझू, धर्म के जानकार तथा प्रेमी थे। उन्होंने व्याख्यान सुनकर पूज्य श्री की बड़ी प्रशंसा की थी।

५. अन्य साहित्य वाचन-शौक.

न्याय तीर्थ की कलकत्ता में परीक्षा देकर बीकानेर लौटते समय मार्ग में रतनगढ़ में विराजमान पूज्य श्री के दर्शनार्थ हम लोग उतर गये थे। दोपहर में हम लोग पूज्य श्री की सेवा में पहुंचे। उस वक्त पूज्य श्री हिन्दु धर्म पर नवीन प्रकाशित ग्रन्थ पढ़ रहे थे। ग्रन्थ का नाम अभी याद नहीं आ रहा है। भीनासर में श्री गणेश-लालजी म. को पूज्य श्री की सेवा में बैठकर ग्रन्थ सुनाते कई बार देखा था। कभी पूज्य श्री टहलते टहलते सुनते जाते थे। स्वामी रामतीर्थ, विवेकानन्द, गांधी, तिलक, टाल्स्टाय आदि विचारकों का साहित्य समय समय पर पूज्य श्री ने अपने शिष्यों से पढ़वाकर सुना था। गांधी साहित्य पर पूज्य श्री का प्रेम था। पूज्य श्री का वाचन बहुत विशाल था, वाचनशौक के कारण ही जैन धर्म की बातों को विशाल रूप में समझ सके और जनता के सामने रख सके हैं। सूत्रों की टीकाएं भी पूज्य श्री ने देखी हैं। हम लोग अनाथ रूप

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

से ३२ आगम ही मानते हैं। टीका भाष्य चूर्णी वगैरह को प्रमाण रूप से स्वीकार नहीं करते। किन्तु पूज्य श्री का इस विषय में यह खुलासा सुना हुआ है कि हमारे अङ्गोपाङ्गों की वाचि के अनुकूल जो भी वाणी है वह सभी हमें मान्य है। इस दृष्टि से हमारा ज्ञान भण्डार बहुत विशाल हो जाता है।

रतनगढ़ में 'रूप सम्पन्ने' का अनोखा अर्थ सुनकर मैं बहुत खुश हुआ था। मैं अभी की अपेक्षा छोटी उम्र में अधिक श्यामवर्ण था। आचार्य के गुणों में रूप सम्पन्न होना आवश्यक बताया गया है। मैं रूप सम्पन्न का अर्थ गौर वर्ण का होना ही समझता था। किन्तु पूज्य श्री से यह खुलासा सुनकर कि गौर वर्ण का होना मात्र ही रूप सम्पन्नता नहीं है किन्तु सच्ची रूप सम्पन्नता गुणों में रही हुई है। पानी के गौर अङ्गों में, तथा आँखों में स्पष्ट तेजोहीनता मालूम पड़ती है। तुम्हारी रूप सम्पन्नता तुम्हारी आँखों में दिखाई देनी चाहिए। तुम्हारी वृत्तियों में यदि निष्पापता होगी तो तुम्हारे चेहरे पर एक विचित्र तेज दिखाई देगा। यही रूप है।

६. स्वच्छता के विषय में–

कुछ जैनेतर लोगों ने यह आक्षेप रखा कि जैन साधु रात्रि को पानी नहीं रखते अतः स्वच्छता कैसे रखते होंगे। पूज्य श्री ने हिन्दु धर्म ग्रन्थों के आधार से एक दिन व्याख्यान में यह सिद्ध किया था कि शुद्धि केवल जल से ही नहीं होती किन्तु मृत्तिका,

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

राख व वस्त्रादि से भी होती है। बहुत से गाँवों के श्रावक स्नान नहीं करने में धर्म हुआ समझते हैं। किन्तु पूज्य श्री पुराने श्रावकों के दाखलों से यह समझाते थे कि श्रावक को अपनी मर्यादाओं के अनुसार चलना चाहिए। लोक व्यवहार में धर्म की निन्दा न हो ऐसा आचरण श्रावक को करना चाहिए।

अन्य सब पाप तो करता रहे और केवल स्नान ही न करे यह ठीक नहीं। त्याग करने का तरीका सीखना चाहिए। क्या पहले छोड़ना और क्या बाद में, इसका विवेक होना चाहिए। यदि कोई वस्त्र मात्र त्यागने का विचार करके एक एक वस्त्र छोड़ता जाय तो पहले क्या छोड़ना चाहिए। धोती या पगड़ी? यदि कोई पगड़ी के पहले धोती छोड़ दे और पगड़ी बांधे रहे तो लोक व्यवहार में उसकी निन्दा न होगी?

पूज्य श्री समझाते थे कि हमारे धर्म क्षेत्र में आज यही हालत हो रही है। श्रावकों को जिन बातों का पहले त्याग करना चाहिए उनका तो नहीं करते और स्नानादि करने का त्याग करते हैं। क्रम पूर्वक किया हुआ व्रत नियम व त्याग शोभा देता है और फलदायी भी होता है। स्नानादि की मर्यादा सातवें व्रत में गर्भित है इस से पहले उसके छः व्रत किस प्रकार है यह विचारना और उनको विशुद्ध बनाना आवश्यक है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

७. आचार की कड़कता—

जूनागढ़ स्टेट के रिटायर्ड चीफ इंजिनीयर राय साहिब ठक्करसी मकनजी घीया ने जब मैं जैन गुरुकुल राजकोट में आचार्य के स्थान पर कार्य करता था, बताया कि पूज्य श्री जैन धर्म के छोटे २ नियमों का बड़ी कड़कता से पालन करते थे। घीया सा० काठियावाड़ विहार के समय ७० वर्ष की उम्र में पूज्य श्री के साथ २ कई मास पैदल घूमते हुए रहे हैं। पूज्य श्री के पैरों में दर्द हो गया था अतः उन्हें लकड़ी के डंडों की झोली में बिठाकर ग्रामानुग्राम पहुँचाया जाता था। एक गांव से लिए हुए डंडों के सहारे दूसरे गांव पहुँच जाने पर वे डंडे वापस उसी गांव में जाकर उसी व्यक्ति को सौंप आना साधुओं का कर्त्तव्य था। श्रावकों की पूज्य श्री किंचित् भी सेवा ग्रहण नहीं करते थे। डंडे स्वयं साधु ही जाकर पहुँचाते थे इस बात से घीया सा० को बड़ा ताज्जुब मालूम पड़ता था। घीया सा० की पूज्य श्री के प्रति बड़ी भक्ति थी। उन्होंने पूज्य श्री की सेवा में मीनासर बीकानेर में ही देह त्याग किया था।

८. 'करना, कराना' का खुलासा.

हमारी समाज में 'दया पालने' का एक रिवाज है। दया में बाजार की मिठाइयाँ व सेव दाल लाकर खाई जाती है। इस रिवाज में से एक शंका उत्पन्न हुई। बाजार की अयतनापूर्वक बनी हुई

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

मिठाइयाँ खाने में पाप कम है या यतना पूर्वक घर पर बने हुए सादे भोजन करने में। यह बात मालवे की तरफ और खासकर रतलाम में बहुत ऊहापोह का कारण बनगई थी और अभी भी बनी हुई है। पूज्य श्री इस विषय का अपने अनुभव व दृष्टान्तों से अच्छा खुलासा करते थे। दो एक दृष्टान्त याद हैं। पूज्य श्री ने व्याख्यान में कहा था 'एकबार मेरे मामा ने कुछ भंग की पत्ती मंगायी थी। मैं अविवेकी था। मुझे इस बात का ज्ञान न था कि जरूरत पूरता पत्ती ही तोड़ूं और लेजाऊं। मैं बहुतसी पत्ती ले गया जिन्हें देखकर मेरे मामा को पश्चात्ताप हुआ। मामा बोले अच्छा होता यदि मैं खुद ही जाकर पत्ती लाता तो इतने पत्तों का व्यर्थ पाप रुक जाता। खुद कार्य करने में और वही कार्य दूसरे से कराने में कितना अन्तर है वह आप लोग देख सकते हो'।

हलवाई बिना छने पानी का उपयोग करता है, शक्कर में मक्खियां पड़ी हों तो भी खयाल नहीं रखता, घी में चिटियाँ हों तो भी ध्यान नहीं देता, लकड़ियों को जीवजन्तु युक्त भट्टी में झोंक देता है, गरज़ कि हलवाई प्रायः सारा कार्य अयतना पूर्वक करता है। यही कार्य यदि कोई जानकार श्राविका बाई अपने घर पर करती है तो उसमें कितना अन्तर पड़ सकता है। पूज्य श्री के दृष्टान्तों का व समझाने का यह नमूना मात्र है। पाप व

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

पुण्य भावना पर निर्भर है। **'जयंभुंजन्तो भासन्तो, पावकम्मं न बंधई'** अर्थात् यतना पूर्वक खाता हुआ और बोलता हुआ व्यक्ति पाप कर्म का बंधन नहीं करता इसका रहस्य पूज्य श्री खूब समझाते थे। इसके साथ गीता के अनासक्ति योग की तुलना करके जैन धर्म के रहस्य को बुद्धिगम्य बना देते थे।

पूज्य श्री कहते मित्रों! आप समझते हो कि कार्य हाथ से करने में ही पाप है और सीधा भोग करने में पाप नहीं है या कम है, इस समझ में भूल है। जिस वस्तु को आप भोगना चाहते हो उसके बनाने से पाप के भय से क्यों घबड़ाते हो। कपड़े पहनना अच्छा लगता है तो कपड़ा बुनने से क्यों डरते हो। भोजन करना अच्छा लगता है मगर पाप के डर से खेती करना अच्छा नहीं लगता है, इसमें भूल है। हम लोग यह समझते हो कि साधु सीधा आहार व वस्त्र लेते हैं अतः निष्पाप रहते हैं। इसी प्रकार हम श्रावक भी सीधे बने वस्त्र व सीधा पका अन्न खायें ताकि पाप से बच जांय। किन्तु इस प्रकार तुम पाप से नहीं बच सकते।

साधु तो अपने निमित्त से बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं करते अतः पाप के भागी नहीं होते। उनके निमित्त से बनाने वाला भी पाप का भागी होता है। किन्तु बनकर या किसान खरीददारों के निमित्त वस्त्र व अन्न पैदा करते हैं अतः तुम पाप से बच नहीं सकते। इसलिए जिन वस्तुओं का उपयोग करते हो

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

उन्हें यदि तुम स्वयं यतना पूर्वक तय्यार करोगे तो कम पाप के भागी बनोगे। इसी प्रकार पूज्य श्री हाथ चक्की के पीसे आटे व मील चक्की-पनचक्की के पीसे आटे में, घर पर गाय रखवाकर उसका दूध पीने में और मोल का दूध पीने में पाप पुण्य का विवेक कराते थे। जैन धर्म को बहुत संकुचित रूप में लोगों ने समझ रखा है इस बात से पूज्य श्री को खेद होता था। उनकी इन धारणाओं से कोई २ नासमझ लोग उनकी श्रद्धा में खामी बताते हैं। मगर मेरे खयाल से पूज्य श्री की श्रद्धा विपरीत नहीं किन्तु सच्ची श्रद्धा है। इत्र व फूल का दृष्टान्त भी पूज्य श्री से सुना हुआ है। एक फूल तोड़ते तुम्हारा मन संकुचाता है मगर असंख्य फूलों के भोग से बने इत्र का उपयोग करते क्यों नहीं संकुचाते।

६ दृष्टान्त कथन की अद्भुत शैली.

भारतीय सभ्यता व संस्कृति का वास्तविक दर्शन कराने वाले अनेक चरित्र लोक में प्रसिद्ध हैं। पूज्य श्री रामचन्द्र की पितृभक्ति का वर्णन करके अविनीत पुत्रों की आँखे खोल देते थे। एक बात मेरे हृदय में घर कर गई। पूज्य श्री ने कहा, दशरथ ने रामचन्द्र को चौदह वर्ष के वनवास की आज्ञा दी और राम ने बिना नानुनच किए उसे शिरोधार्य कर लिया। रामचन्द्र बड़े पुत्र होने के नाते राज्य के हकदार थे। उनका कोई अपराध भी नहीं था। वे सर्वथा योग्य भी थे। फिर भी उन्होंने पिता की आज्ञा में

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

अपना भला माना और वन में चले गये। यह है पितृ भक्ति। यदि राम तुम लोगों की तरह तर्कवितर्क करते, आज्ञा उचित है या अनुचित, इसकी जाँच में पड़ते तो उन्हें आज कौन पूछता। राम हमारे हृदयों के राम नहीं बन पाते। रामायण की रचना भी नहीं होती।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र का जीवन भी पूज्य श्री इस प्रकार चित्रित करते थे कि भारतवर्ष की धर्म प्रधानता स्पष्ट मालूम होने लगती थी। कृष्ण की सेवा व सुदर्शन की अडोलता का खिंचा हुआ चित्र भी मेरी आँखों में अभी तक नाच रहा है। अर्जुन माली के डर के मारे जब कोई भी भगवान् महावीर के दर्शन के लिए जाने की हिम्मत नहीं करता था तब सुदर्शन सेठ निर्भीक होकर दर्शनार्थ जाता है। मुद्गर हाथ में लिए जब अर्जुन माली समक्ष आकर खड़ा रहता है, तब सेठ ध्यानस्थ हो जाते हैं, सेठ के आत्मिक तेज के प्रभाव से अर्जुन के शरीर का यक्ष निकल भागता है इत्यादि वर्णन सुनकर मनको बड़ी हिम्मत मिलती थी। महाभारत के पात्रों को अध्यात्मिक पात्र बनाकर समझाने की शैली भी पूज्य श्री की अपूर्व थी। किसी दृष्टान्त की घटना इस प्रकार रखते थे कि उसका व्यंग्यार्थ स्पष्ट मालूम पड़ जाता था। कभी २ तो ऐसा मालूम पड़ता था कि यह दृष्टान्त नहीं है। हमारी चित्तवृत्ति का ही पूज्य श्री वर्णन कर रहे हैं।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

१० गोपालन के विषय में.

'भारत देश में 'गौ' माता समझी जाती है। पूज्य श्री ने जब घाटकोपर में चातुर्मास किया था तब आधुनिक ढंग का कसाई खाना देखा था। इसे देखकर उनके हृदय में अनन्त करुणा बुद्धि उत्पन्न हुई और गौरक्षा के लिए जोरदार आन्दोलन शुरू किया था। पूज्य श्री का उपदेश था कि दो चार गायें छुड़ा देने से काम नहीं चल सकता, मगर तुम श्रावक जब तक अपने घरों पर गायें नहीं रखोगे तब तक गौमाता का उद्धार नहीं हो सकता। तुम्हारे आदर्श आनन्द, कामदेवादि श्रावक साठ साठ हजार व चालीस २ हजार गायें रखते थे। उनका श्रावक व्रत इससे भंग नहीं होता था। तुम लोग क्यों नहीं उनका अनुकरण करते। तुमने अपना कर्त्तव्य भुला दिया है इसी कारण इन बेचारी गायों की बलि होती है। गाय का दूध सात्विक व पौष्टिक होता है। श्री कृष्ण ने गायें चराई थी। तुम लोग पुरातन सभ्यता को मत भुलाओ। इत्यादि २।

११. ग्राम व नगर धर्म के विषय में—

पूज्य श्री स्थानांग सूत्र में बताये गये दस धर्मों का विवेचन करके श्रुत और चारित्र धर्म की पुष्टि करते थे, कि जब तक गाँव व शहर के नियमों की व्यवस्था का बराबर पालन न किया जायगा तब तक श्रुत व चारित्र धर्म का निर्वाह नहीं हो सकता। इनका परस्पर अन्योन्याश्रय भाव है। राष्ट्र धर्म का विवेचन करके

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:43 PM

राष्ट्रीय आन्दोलन में परोक्ष रूप से पूज्य श्री बड़ी मदद पहुँचाते थे। राजा का कर्तव्य भी पूज्य श्री बताते थे। राजकोट जैन गुरुकुल के गृहपति, लक्ष्मण भगवान् पटेल ने मुझसे कहा था कि पूज्यश्री के व्याख्यान में राष्ट्रीय कार्य कर्ता बहुत अधिक संख्या में आते थे। इस वक्त राजकोट में सत्याग्रह-आंदोलन भी चलता था। वीरावाला के अत्याचार से प्रजा पीड़ित थी। पूज्यश्री अपने व्याख्यानों में अन्याय का विरोध करने का उपदेश देते थे। अन्याय सहन करना भी पाप है। केवल पीड़क ही पापी नहीं है मगर पीड़ित भी पापी है। मेरा व्याख्यान सुनकर के, अमल करो। सच्चा व्याख्यान श्रवण उस तत्व के अमल में है।

राष्ट्र धर्म के लिए पूज्य श्री के विचार स्पष्ट हैं। वे कहते थे-जब तक देश में परतंत्रता है, गरीबी है, तब तक धर्माराधन ठीक रूप में हो नहीं सकता। और तो और किन्तु हम लोग धर्म का उपदेश भी नहीं कर सकते। दारु निषेध का उपदेश दें तो सरकार की आबकारी में हानि पहुँचती है। वेश्यागमन न करने का उपदेश दें तो भी टैक्स में कमी पड़ती है। गौरक्षा का उपदेश करना भी कठिन हो गया है। इस प्रकार के पाप पूर्ण राज्य का जब तक अन्त नहीं हो जाता जैन धर्म के श्रुत चारित्र धर्म का यथावत आचरण नहीं किया जा सकता। ये हैं पूज्य श्री के राष्ट्रीय खयालात जिन्हें सुनकर हम लोग सत्य के दर्शन कर पाये हैं।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

१२. फैशन के विरोध में--

पूज्य श्री आधुनिक नखरे बाजी व फैशन के घोर विरोधी थे। वे नवयुवकों को ललकार कर कहते 'तुम्हारे चेहरे पर तेज नहीं है, तुम्हारी आँखों में लुनाई नहीं है, ऊपर का तेल लवेंडर लगाकर कब तक शोभा कायम रखोगे। ब्रह्मचर्य रूपी रत्न की रक्षा करो जिससे ऊपरी तैल न लगाना पड़े और चेहरा चमकता रहे। फैशनेबल महीन विदेशी वस्त्र छोड़कर खादी के मोटे वस्त्र धारण करो। युवको! फैशन छोड़ कर भारतमाता व जैन धर्म का उद्धार करो। बालों पर भी पूज्य श्री कटाक्ष करते थे। 'सादा रहन सहन भोजन हो, सादा भूषा वेष' इस पर पूज्य श्री बहुत भार देते थे।

१३. सार्वजनिक संस्थाओं के चंदे के विषय में--

पूज्य श्री बिना विचारे कुछ नहीं कहते थे। बड़े २ आचार्य व मुनियों के व्याख्यान में संस्थाओं के संचालक चंदा करने को सभा से अपील करते हैं कि यदि मुनि श्री ने समर्थन कर दिया तो उनका काम बन जाता है। पूज्य श्री इस बात के खिलाफ थे। वे कहते हम जब तक किसी संस्था को अच्छी तरह समझ न लें, कि उसमें दान का सदुपयोग होता है या दुरुपयोग, यह जाने बिना केवल कार्य कर्ताओं को खुश करने के लिए कैसे समर्थन करदें। समर्थन के पीछे जिम्मेवरी आ पड़ती है।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

१४. भक्ति, ज्ञान व चारित्र पर नित्य ही भाषण–

व्याख्यान का ढंग पूज्य श्री का निराला था। मुक्ति के तीन कारण हैं। ये तीनों कारण साक्षात् कारण हैं। साधक अवस्था में ये तीनों कारण अल्पांशिक परिमाण में रहते हैं मगर सिद्ध अवस्था में ये तीनों कारण पूर्ण हो जाते हैं। अर्थात् सम्यग्ज्ञान दर्शन व चारित्र अपूर्ण अवस्था में कारण गिने जाते हैं और पूर्ण हो जाने पर कार्य रूप बन जाते हैं। इनकी पूर्णता ही मुक्ति है। मोक्ष की यही नसैनी है। पूज्य श्री ने इसी नस को पकड़ा और सदा इसी पर भाषण करते। जिन्हें हम जैन सम्यग् दर्शन ज्ञान व चारित्र कहते हैं, हिन्दु धर्म में उन्हें भक्ति ज्ञान व चारित्र कहा गया है। हिन्दु धर्मानुसार भी यही तीनों मुक्ति के कारण हैं। पूज्य श्री सब से पहले व्याख्यान में प्रार्थना करके उसका विवेचन करते। प्रभु के प्रति श्रद्धा भाव जाग्रत करते। तत्पश्चात् ज्ञान मार्ग का–अर्थात् तत्त्वज्ञान का किसी शास्त्र के आधार से प्रतिपादन करते और सब से अन्त में किसी महापुरुष या सति का चरित्र कहते। उस चरित्र रूपी आईने में अपना रूप देखकर हम लोग जीवन सुधार सकते हैं। इस प्रकार का पूज्य श्री का व्याख्यान जैन व जैनेतर विद्वान् व अविद्वान् सभी के लिए उपयोगी हो जाता था।

१५. श्री मोतीलालजी की शंका का समाधान.

स्थानकवासी जैन एज्युकेशन बोर्ड, रतलाम, के सेक्रेटरी व जैन धर्म के अच्छे ज्ञाता, श्री मोतीलालजी श्रीश्रीमाल (बालचन्दजी

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

सा० के भाई) से हमारा समाज परिचित है। इनको एक शंका थी। वह यह कि सम्यग्दृष्टि व्यक्ति जो कुछ करता है वह निर्जरा का ही कारण होता है। सम्यग्दृष्टि का स्त्री के साथ मैथुनगमन भी निर्जरा का ही कारण है। श्रावक का चतुर्थ व्रत भगवान् की आज्ञा में है अतः मैथुन क्रिया भी श्रावक की आज्ञा में हुई। और आज्ञा में होने से निर्जरा का कारण भी हुई। उक्त शंका श्रीश्रीमालजी ने मेरे समक्ष भी रखी थी। उस वक्त पूज्य श्री रतलाम में थे। हम लोग उनकी सेवा में पहुँचे। पूज्य श्री ने इस बात का विरोध किया। श्रावक या सम्यग्दृष्टि का स्त्रीगमन निर्जरा का कारण नहीं है मगर बन्ध का ही कारण है। अलबत्त मिथ्यात्वी-जितनी आसक्ति से गमन करेगा उसकी अपेक्षा सम्यग्दृष्टि कम आसक्ति भाव से गमन करेगा मगर जितना आसक्ति-राग भाव होगा उतना बन्ध अवश्य होगा। आसक्ति के बिना मैथुन क्रिया सम्भव नहीं है। आचाराङ्ग सूत्र में चतुर्थव्रत को निरवद्य कहा है। दूसरी बात मैथुन सेवन भगवान् की आज्ञा में भी नहीं है। आज्ञा व छूट में बड़ा अन्तर है। उस समय पूज्य श्री ने हजरत मोहम्मद साहब का दृष्टान्त सुनाया था। जब लोग मनुष्य को मारकर खा जाते थे, तब मोहम्मद साहिब ने बकरों के मारने की छूट दी थी। यह आज्ञा नहीं थी। आज्ञा का पालन नहीं करने से तो पाप लगता है। मगर छूट का उपयोग नहीं करने से धर्म होता है। अतः चतुर्थ या

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

पंचम गुण स्थानवर्ती के लिए मैथुन सेवन की तीर्थङ्करों की आज्ञा नहीं है मगर छूट है। जो सर्वथा त्याग नहीं कर सकता वह मर्यादा करे। तुम लोगों को हम साधु एकासना पच्चखाते हैं। सो एक बार खाने की आज्ञा नहीं करते मगर एक बार न खाने की प्रतिज्ञा दिलाते हैं। उसमें एक बार खाने की छूट रह जाती है। पूज्य श्री का खुलासा सुनकर मुझे तो सन्तोष हो गया। श्रीयुत मोतीलालजी को सन्तोष हुआ या नहीं मुझे पता नहीं। शंकाओं का निरसन करने की पूज्य श्री की शक्ति कमाल की थी। शंका की जड़ पकड़ कर उसे उखेड़ देते थे।

१६. विश्ववंद्य महात्माजी के साथ–

मैं पहले यह लिख चुका हूं कि पालनपुर में एक दिन मैंने मुनि श्री सौभाग्यजी की सेवा में बैठकर रात को दो बजाई थी। उसी रात को मुनि श्री ने मुझे राजकोट में महात्मा गांधीजी को पूज्य श्री की मुलाकात के सम्बन्ध में बताया था। शाम के प्रतिक्रमण के समय महात्माजी पूज्य श्री की सेवा में पधारे। पूज्य श्री अपना पाट छोड़कर नीचे बैठने लगे कि महात्माजी ने रोक दिया और कहा कि आपको ऊपर बैठना ही शोभा देता है। आप धर्मगुरु हैं। इसके पश्चात् दोनों का आपस में वार्तालाप शुरू हुआ। बातों का विषय था शरीर तन्त्र। इस शरीर में अन्न जल पहुँचता है। अन्न व जल को पचाने वाले नख बाल को कौन गति प्रदान करता है। खून का

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

दौरा सर्व शरीर में कैसे होता है। इस शरीर रूपी यन्त्र में कौन शक्ति कार्य कर रही है आदि बातें हुई। चूंकि महात्माजी को सीधा ट्रेन में जाना था अतः थोड़ा समय ही ठहर सके। अधिक न ठहरने का खेद जाहिर किया। इस मुलाकात में मुझे जो बात लेनी है वह यह है कि गुणीजनों के प्रति पूज्य श्री का कैसा व्यवहार था। अपना आसन छोड़कर नीचे बैठने का खयाल करना, पूज्य श्री का विनय भाव प्रकट करता है। कानोड़ में साधुता की शान रखने का जिक्र कर गया हूं और यहां नम्रता-निरभिमानता का जिक्र कर रहा हूं। पूज्य श्री बड़े समयज्ञ व गुणावगुण के परीक्षक थे।

१७. यदि छोटे दायरे में न होते तो—

राजकोट में पूज्य श्री के स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर, रतलाम में पूज्य श्री के स्वास्थ्य लाभ की खुशी के अवसर पर और इन्दौर में पूज्य श्री के स्वर्गवास की शोक सभा में मुझे पूज्य श्री के सम्बन्ध में कुछ भक्ति भाव प्रकट करने के अवसर मिले थे। उक्त तीनों सभाओं में मैंने यह भाव जाहिर किया था कि यदि पूज्य श्री स्थानकवासी समाज के इस छोटे से दायरे में न होते और सकल भारत भूमि के विशाल क्षेत्र में कार्य करते तो वे भारत के महामाननीय बड़े नेता होते। इसका यह अर्थ नहीं है कि उनसे देश को लाभ न पहुँचा हो। मेरा कहने का आशय यह है कि

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

भारत में अनेक साम्प्रदायिक दायरे हैं। अपने २ ग्रुप के व्यक्ति अपने २ दायरे में मस्त रहते हैं। दूसरी समाजों व सम्प्रदायों में रहे हुए गुणों को ग्रहण करने की हमारी उदारता अभी छोटी है। मसजिद में यदि कोई आलिम फाजिल मौलवी, जो कि बड़ा आत्म-ज्ञानी हो भाषण करता हो तो उसका लाभ स्थानकवासी जैन नहीं ले सकते। कारण कि मसजिद में जाने से हमें नफरत है। इसी प्रकार हमारे स्थानकों में आकर पूज्य श्री जैसे समर्थ आचार्य के भाषण सुनने में भी अन्य सम्प्रदायों के लोगों को नफरत हो सकती है। यदि पूज्य श्री इस छोटे स्टेज पर भाषण करने के बजाय पब्लिक स्टेज पर भाषण करते और अपना जीवन समग्र भारत के कल्याण के लिए समर्पित करते तो आज वे भारत में कुछ और ही रूप में देखे जाते व पूजे जाते।

१८. मेरे तीन महान् उपकारी—

श्री स्थानांग सूत्र के तीसरे ठाणे में तीन महान् उपकारियों का वर्णन है। उन तीनों के उपकार से, यदि कोई अपने शरीर के चर्म के जूते बनाकर पहनाये तो भी उरिण नहीं हो सकता है, ऐसा शास्त्रकार ने कहा है। वे तीनों उपकार ये हैं।

१ माता-पिता (शरीर प्रदान करने वाले) २ सेठ (जीविका प्रदान करने वाले) ३ धर्म गुरु (ज्ञान प्रदान करने वाले)

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

१ मुझ पर मेरे माता-पिता का भी उपकार अवर्णनीय है अपनी अत्यंकर आर्थिक संकटावस्था में भी मेरा बचपन उन्होंने कैसे निभाया था इसकी स्मृति दुःखमयी है। मुझे पढ़ाने के लिए मेरे पिताजी ने क्या२ कष्ट झेले है, यह कथा लम्बी है।

२ मेरे दूसरे महान् उपकारी सेठ भैरोंदानजी सेठिया है। उन्होंने अपने पुत्रवत् मेरे साथ व्यवहार करके मेरे ज्ञान दान में आर्थिक सहायता में, सगाई व शादी के अवसर पर मेरी हैसियत से अधिक एक बड़ी रकम प्रदान करके तथा मेरे पूज्य पिताजी के अन्तिम कारज के मौके पर भी अच्छी रकम देकर सेठ साहिब ने मेरा कार्य सरल बना दिया। मैं जो कुछ दो अक्षर जानता हूं वह उन्हीं का प्रताप है। मेरी पढ़ाई के पीछे सेठ साहिब ने करीब दस हजार रुपये खर्च किए हैं। सेठ वर्धमानजी साहिब पितलिया ने एक बार सेठिया विद्यालय का निरीक्षण किया था। निरीक्षण करके उन्होंने बताया कि एक एक छात्र के पीछे एक सौ दस रुपये खर्च होते हैं। हम छः छात्र साथी थे। मैं सात वर्ष तक सेठियाजी सा. के यहाँ रहकर पढ़ा हूं। स्थानकवासी समाज के अनेक शहरों के अनेक धनीमानी व्यक्तियों के संपर्क में रहने का मुझे अवसर मिला है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि सेठियाजी के समान उदार, नम्र, प्रण का पक्का, धर्मनिष्ठ, श्रद्धावान्, गरीबों के दुःखदर्द व आवश्यकता का खयाल करने वाला व्यक्ति कोई विरला ही होगा।

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

३ मेरे तीसरे किन्तु सब से महान् उपकारी पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज हैं। मेरे माता-पिता ने शरीर दिया, सेठियाजी ने बुद्धि दी, मगर आत्मा की पहचान मुझे पूज्य श्री ने कराई है। धर्म का मर्म पूज्य श्री से समझ पाया हूं। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मैंने उनसे अनेक बातें ग्रहण की हैं। मेरे विचारों में जो विशालता आई है उस में पूज्य श्री के भाषण ही कारण हैं। जैन धर्म की साधना-प्रणाली व वस्तु विवेचन प्रणाली पूज्य श्री से समझकर कृत्यकृत्य हुआ हूं। अनेक महापुरुषों के चरित्र उनसे सुनकर जीवन को बड़ी प्रेरणा मिली है।

शासनदेव से मेरी यह प्रार्थना है कि वह मुझे उक्त तीनों महान् उपकारियों के उपकार से उरिण होने के लिए अच्छा अवसर प्रदान करे। उरिण होने का मार्ग भी मैं पूज्य श्री से समझा हुआ हूं। वह मार्ग है दीन दुःखियों की सेवा में अपने आपको समर्पित कर देना। उस दिन की प्रतीक्षा में मैं बैठा हूं।

१६ उनके व्याख्यान उन्हें अमर बना चुके हैं।

पूज्य श्री को पूज्य श्री के भाषण अमर बना चुके हैं। उनके स्मारक में अच्छी रकम हो रही है यह सुनकर विशेष खुशी नहीं हुई क्योंकि समाज में फंड कहाँ कम हैं, कमी तो कार्य-कर्ताओं को है तथा फंडों को रिजर्व न रखकर सदुपयोग करने की है। फंड पर से स्वांग छूटना आवश्यक है। स्वामी राम कृष्ण परम हंस

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:44 PM

बड़े आध्यात्मिक ज्ञानी हो गये हैं। उनको अपना नाम भी लिखना न आता था। किन्तु स्वामी विवेकानंद जैसे योग्य शिष्य ने उनको अमर बना दिया है। पूज्य श्री को उनके व्याख्यान अमर बना चुके हैं। यदि उनके सारे भाषण एक सीरीज रूप में प्रकाशित हो जाय तो समाज व देश का बड़ा कल्याण होगा। साथ में समाज भी उनके उपकारों का इस तरह कुछ बदला चुका सकेगी। जैसे स्वामी रामतीर्थ के, विवेकानंद के व गांधीजी के समग्र भाषण व विचार जुदी जुदी मालाओं के रूप में प्रकाशित हुए हैं वैसे ही सरल सीधी व फड़कती हुई भाषा में पूज्य श्री के सारे भाषण व विचार प्रकाशित किये जाय।

पालनपुर में मुनि श्री सोरेमलजी ने मुझ से कहा था कि दस वर्षों के भाषण अभी अप्रकाशित पड़े हैं। उनकी इच्छा मुझ से सम्पादन कार्य कराने की थी। मगर मैं तो राजकोट चला गया था। बाद में क्या हुआ, मालूम नहीं है। पूज्य श्री की एक खास दृष्टि थी। विशालता। वह विशालता उनके भाषणों में स्पष्ट दिखाई देती है। देखने वाला चाहिए।

नीचे लिखे विषयों पर पूज्य श्री खास विचार दे गये हैं—

१ खादी व जैन धर्म,

२ अल्पारम्भ व महारम्भ,

३ अहिंसा व हिंसा,

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:45 PM

४ स्त्री समाज के आदर्श,

५ करना न कराना,

६ प्रार्थना,

७ दया व दान,

८ ज्ञानदान के सम्बन्ध में,

९ श्रावक धर्म पर,

१० ग्राम नगरादि धर्मों का विवेचन,

११ कृषि व गौपालन आदि,

इन विषयों पर जैन धर्म की शैली से पूज्य श्री ने विचार किया था। और शास्त्र प्रमाणों से इन विषयों को पुष्ट किया है।

२० पूज्य श्री के समग्र जीवन को खयाल में रख कर यह कहा जा सकता है कि उनका जीवन आत्मसाधना में ही व्यतीत हुआ है। पचास वर्ष तक जिस व्यक्ति ने मुख पर काबू रखने के लिए मुखवस्त्रिका बाँधी हो और गांव २ फिर कर जनता को उपदेश दिया हो उस के जीवन के विषय में क्या कहना। वह तो परिस्ता ही था। उनका सार्वजनिक जीवन उनके व्यक्तिगत जीवन से कहीं बढ़ कर था।

ॐ

शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:45 PM

श्री साधुमार्गी जैन पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के हितेच्छु श्रावक मंडल ने श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के प्रवचनों को लिपिबद्ध करके उस संग्रह में से जो साहित्य प्रकाशित किया उससे जैन एवं जैनेतर जनता ने बहुत ही लाभ उठाया है। आप भी निम्न लिखित पुस्तकें मंगवाकर लाभ उठाइये।

श्रावक का अहिंसा व्रत	।)	सकडालपुत्र श्रावक	=)
" का सत्यव्रत	=)	हरिश्चन्द्र-तारा	।।=)
" का अस्तेय व्रत	=)	धर्मव्याख्या	।-)
" ब्रह्मचर्य व्रत	।)	सुदर्शन चरित्र	।=)
" का परि. परि. व्र.	।-)	सती राजमती	।।।
" के तीन गुण व्रत	।)॥	रुक्मणी विवाह	॥)
" के चार शिक्षा व्र.	।=	सती वसुमति	।।)
जवाहिर किरणावली		सेठ धन्नाजी	।।।
तीन भाग (अप्राप्य)	३।)	मदनरेखा चरित्र	।।=)

श्री भगवती सूत्र के व्याख्यान (छप रहे हैं)

पूज्य श्री के प्रवचन संग्रह में से अन्य साहित्य भी सम्पादन कराके प्रकाशित होने की योजना हो रही है, सहायक बनिये।

विनीत—पूर्णचन्द्र दक

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:45 PM

₹ 20 /-

978-93-86952-56-1

SADHUMARGI PUBLICATION

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh
"SAMTA BHAVAN" Aacharya Shree Nanesh Marg.
Nokha Road, Gangasahar, Bikaner - 334401 (Rajasthan)
Tel. : 0151-2270 261/262/359
e-mail : absjsbkn@yahoo.co.in | www.sadhumargi.com

shreemadjawaharachariy
Thursday, October 31, 2019 12:09:45 PM